

Key to Navjeevan Practice Book

Standard
6

Teacher's Copy

हिंदी सुलभभारती


NAVJEEVAN
PUBLICATIONS PVT. LTD.
MUMBAI ★ PUNE

अनुक्रमणिका

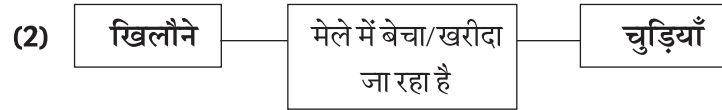
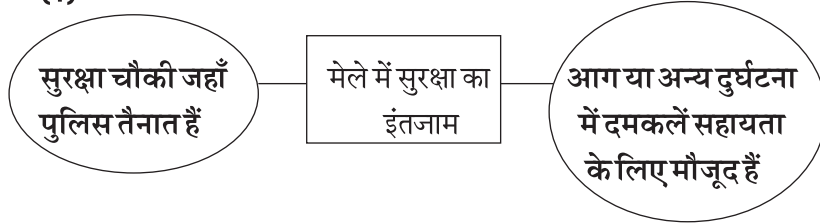
अ.क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
*	मेला	3
	पहली इकाई	
१.	सैर	4
२.	बसंती हवा	7
३.	उपहार	9
४.	जोकर	13
५.	(अ) आओ, आयु बताना सीखो	14
	(आ) महाराष्ट्र की बेटी	16
६.	मेरा अहोभाग्य	16
७.	नदी कंधे पर	20
८.	जन्मदिन	21
९.	सोई मेरी छौना रे !	27
★	स्वयं अध्ययन	29
★	पुनरावर्तन - १	31
	दूसरी इकाई	
१.	उपयोग हमारे	35
२.	तूफानों से क्या डरना	36
३.	कठपुतली	43
४.	सोना और लोहा	47
५.	(अ) क्या तुम जानते हो ?	47
	(ब) पहेलियाँ	48
६.	स्वास्थ्य संपदा	52
७.	कागज की थैली	53
८.	टीटू और चिंकी	53
९.	वह देश कौन-सा है ?	60
★	स्वयं अध्ययन	60
★	पुनरावर्तन - २	61

मेला

जब किसी स्थान पर लोग किसी सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक या अन्य कारणों से एकत्रित होते हैं तो उसे मेला कहते हैं। एक ही मेले में तरह-तरह के क्रियाकलाप देखने को मिलते हैं। यहाँ चित्र में देखते ही अंदाजा आ जाता है कि यहाँ खचाखच भीड़ है। अलग-अलग झुले, दुकानें देखने को मिल रही हैं। कहीं खिलौने बिक रहे हैं तो कहीं चुड़ियाँ। गुब्बारेवाला बड़े-बड़े रंगबिरंगे गुब्बारे फुलाकर बच्चों को आकर्षित कर रहा है तो सीटी वाला सीटी बजाकर बच्चों को लुभा रहा है। इसलिए भीड़ के साथ-साथ मेले में खूब शोर भी है। मिठाई, चाट, भेलपुरी तथा तरह-तरह के खाद्य पदार्थ बेचे जा रहे हैं और वहाँ भी काफी भीड़ नजर आ रही है।

मेले में भीड़ के चलते सुरक्षा का पूरा इंतजाम भी है। वहाँ एक सुरक्षा-चौकी है जहाँ पुलिस तैनात हैं। आग से बचाने के लिए दमकलें भी खड़ी हैं। सहायता कक्ष भी खोला गया है जहाँ मदद की गुहार लगा सकते हैं। पीने के पानी की भी व्यवस्था है। साथ में पानी के बचत का संदेश भी दिया जा रहा है। हर उम्र के लोग मेले का भरपूर आनंद उठा रहे हैं।

(1)

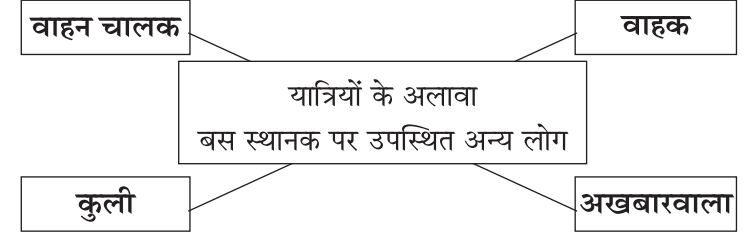


पहली इकाई

1. सैर

कृतिपत्रिका

प्र.1. (1)



- (2) (i) (1) बस पर लिखा है, 'राष्ट्रीय संपत्ति, हमारी संपत्ति।'
 (2) बस स्थानक पर लिखा हुआ है कि, "आपकी यात्रा सुखद हो।"
 (ii) (1) यात्रियों को अपनी गाड़ी पकड़ने में मदद मिले इसलिए फलक पट्टियों पर फ्लाट क्रमांक लिखे होते हैं।
 (2) यात्रियों को खाने-पीने की चीजें मिले इसलिए बस स्थानक पर उपाहार गृह खोलते हैं।

(3)

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़की	लड़कियाँ	लड़का	लड़के
औरत	औरते	आदमी	आदमी

(4)

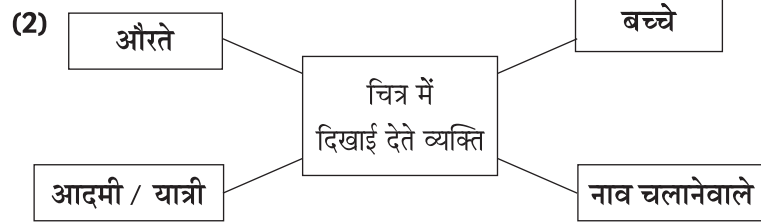
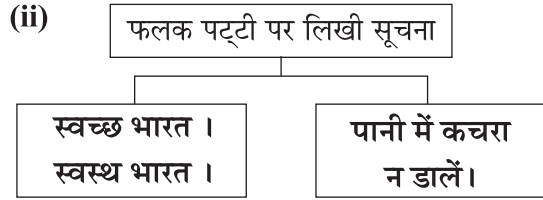
मेरी अविस्मरणीय यात्रा

पिछली छुट्टियों में मैं महाबलेश्वर गया था। दिवाली की छुट्टियों में मेरे पिताजी ने सारे परिवार के साथ महाबलेश्वर जाने का निश्चय किया था। मेरी माँ, पिताजी, मेरी बहन रुपाली और मेरे चाचा का परिवार भी था। हम मुंबई से रेल गाड़ी में बैठे और छह घंटे के सफर के बाद सातारा पहुँचे। वहाँ से प्रायव्हेट बस से हम महाबलेश्वर की ओर निकले। चारों तरफ फैली हरियाली, हरे-भरे पेड़ की शोभा मन को आनंद दे रही थी। वहाँ हम एक होटल में ठहरें।

सुबह उठकर हम पँचगनी गए। इसे प्रकृति की सुंदरता का वरदान मिला है। वहाँ का दृश्य सुहाना और स्फूर्तिदायक था। वहा की हवा में बहुत ठंडक थी। चारों ओर गहरी घाटियाँ थी। वहाँ का नजारा मन मोह लेनेवाला था। वहाँ हमने घुडसवारी की। मेरे चाचा के लड़के ने अपने कैमरे से वहाँ की तस्वीरे खींची। वहाँ पर हमने गरम-गरम भजियाँ खाए।

दूसरे दिन हम प्रतापगढ़ किला देखने गए। तीन दिन सुबह-शाम घूमकर हमने और भी कई जगह देखी जैसे - मंकी पॉइंट, वेण्णा तालाब। बहुत घूमने के बाद भी पलभर भी थकान नहीं लग रही थी। महाबलेश्वर के बाजार में दिनभर यात्रियों का मेला लगा रहता है। वहाँ चप्पल, चिक्की, स्ट्रॉबेरीज, चॉकलेट्स, रंग-बिरंगे पंखे आदि चीजें बेची जाती है। हमने वहाँ से स्ट्रॉबेरीज और चिक्की खरीदी। पूरे परिवार के साथ चार दिन मौजमस्ती में कैसे निकल गए पता ही नहीं चला। यहाँ बिताए हर पल ने मन को सुकून दिया था। प्रकृति की गोद में बिताई हुई वह हमारी यात्रा अविस्मरणीय थी।

प्र.2. (1) (i) (1) जलमार्ग (2) जहाज

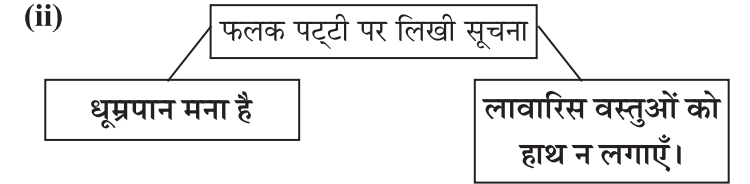
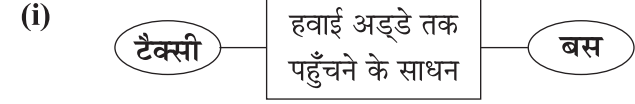


(3) (i) (1) जल, नीर। (2) खग, विहग।

(4) स्वस्थ शरीर, मन और आत्मा के लिए स्वच्छता महत्त्वपूर्ण है। स्वच्छता उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि भोजन, पानी और ऑक्सीजन हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है। जहाँ गंदगी है, वहाँ बीमारियाँ पनपती हैं। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें अपना क्षेत्र, पर्यावरण साफ रखने में

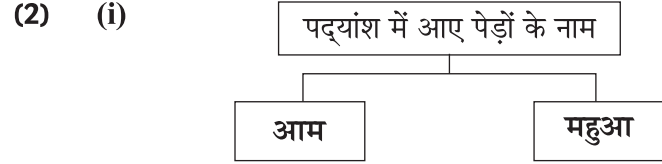
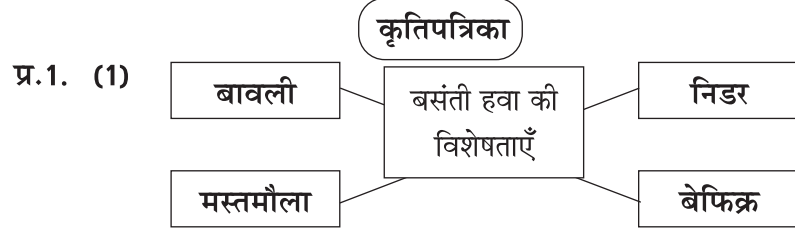
अपनी भूमिका निभानी चाहिए। कूड़ा केवल कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए। अपने घर की तरह ही गाँव, नगर और देश को स्वच्छ रखने के लिए सक्रिय रहना चाहिए। सफाई हमें एक सकारात्मक सार्वजनिक छवि बनाने में मदद करती है। इसलिए बचपन से ही हमें स्वच्छ खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने की आदत डाल लेनी चाहिए।

प्र.3. (1)



- (2) (i) (1) चित्र में यातायात का कौनसा मार्ग चित्रित है ?
(2) फलक पट्टी पर लिखी सूचना के अनुसार क्या करना मना है ?
- (ii) (1) हवाई जहाज (2) अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा
- (3) (i) (1) राष्ट्र + ईय (2) हवा + ई
(ii) (1) अड्डे (2) वस्तु
- (4) हमें रेल, बस या सार्वजनिक स्थलों पर लावारिस वस्तु दिखाई दे तो उसे हाथ नहीं लगाना चाहिए क्योंकि उसमें कोई विस्फोटक वस्तु हो सकती है। जिससे अपनी और कई लोगों की जान को खतरा हो सकता है। हमें अगर ऐसी कोई लावारिस वस्तुएँ दिखाई पड़े तो तुरंत हमें बसचालक या रेल अधिकारी को या नजदीक के पुलिस थाने में जाकर इसकी जानकारी देनी चाहिए। इससे आगे होनेवाली हानी टल सके। बहुत से लोगों की जान बच सकती है।

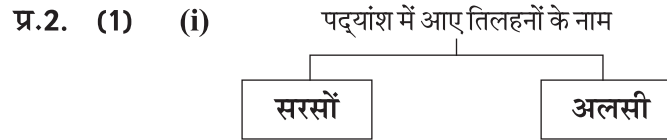
२. बसंती हवा



(ii) गेहूँ (iii) मस्तमौला

(3) बसंती हवा अपना परिचय देते हुए कह रही है कि, “मैं बसंती हवा हूँ, एकदम अनोखी हवा हूँ। मैं बहुत सीधी-साधी हूँ, बावली-सी और मनमौजी। जहाँ चाहूँ वहाँ बेझिझक चली जाती हूँ। मुझे कोई चिंता नहीं कि कौन मेरे बारे में क्या सोचता है। मैं तो एक अजब मुसाफिर हूँ।”

“मैं बसंती हवा हूँ। पहले मैं महुआ के पेड़ पर चढ़ गई और वहाँ थपाथप मचाया। इसके कारण धम्म से नीचे गिरी और उतने ही वेग से आम के पेड़ पर चढ़ गई। मैंने उसे भी झोंका दिया। उसके कान में ‘कू’ आवाज निकालकर झट से उतरकर भाग गई। फिर वहाँ से हरे खेत में पहुँची। वहाँ गेहूँ की फसल को खूब लहराया, तरंगित किया।”



(ii) (1) गगरी गिरी नहीं। (2) हवा हार गई।

(2) (i) (1) हार (2) बसंती

(ii) (1) शीश (2) कलसी

(3) “मैं बसंती हवा हूँ। प्रहर दो प्रहर ही नहीं अनेकों प्रहर तक मैं इन्हीं खेतों में रही। वहाँ मैंने अलसी को देखा जो अपने मस्तक पर गगरी लिए खड़ी थी। मुझे शरारत सूझी। मैंने उसको खूब हिलाया-झुलाया और उसकी गगरी गिराने की कोशिश की परंतु गगरी गिरी ही नहीं।”

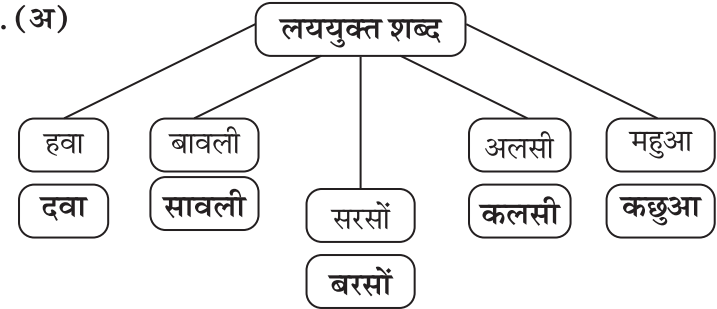
कलसी (गगरी) न गिरा पाने पर मैंने हार मान ली और सरसों के खेत में चली गई। पर वहाँ मैंने सरसों को न हिलाया, न झुलाया। ऐसी ही हूँ मैं बसंती हवा।

- प्र.3. (1) केदारनाथ अग्रवाल
- (2) इसी हार को पा हिलाई न सरसों, झुलाई न सरसों, हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।
- (3) इन पंक्तियों में बसंती हवा का नटखट वर्णन आया है। लयात्मक शब्दों के कारण यह पंक्तियाँ मुझे पसंद हैं।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (i) महुआ (ii) गेहूँओं (iii) गिरी
- (आ) (i) गेहूँओं (ii) कलसी (iii) फिकर (iv) धम्म
- (इ) (i) (ii)
- (ई) (i) महुआ के पेड़ से (ii) गेहूँ के खेतों में

★प्र.2. (अ)



(आ) (i) फिकर (ii) कलसी (iii) हवा (iv) मुसाफिर

(इ) (i) बड़ी (ii) डरपोक (iii) नीचे (iv) जीत

3. उपहार

कृतिपत्रिका

- प्र.1. (1) (ड) ऋत्तिक ने पेड़ों के पीछे तेज रोशनी देखी।
(ब) वहाँ सुनहरें पंखों वाली एक परी खड़ी थी।
(क) ऋत्तिक के आँखों में आँसू आ गए।
(अ) तुम्हारी मदद करने के लिए ही मैं आई हूँ।
- (2) (i) अपने दोस्तों के साथ पुस्तक मेला देखना — ऋत्तिक की इच्छा — पुस्तकें खरीदना
- (ii) (1) वह अपने दोस्तों के साथ मेला देखने और पुस्तकें खरीदने नहीं जा पाया था।
(2) वहाँ उसे बहुत तेज रोशनी दिखाई दी थी।
- (3) (i) (1) चुप (2) उजाला
(ii) (1) बेचना (2) दुश्मन
- (4) पुस्तक पढ़ने से एकाग्रता बढ़ती है। हमारा ज्ञान बढ़ता है। जानकारी बढ़ती है। नए शब्द, नयी बातें पता चलती हैं। जिसके कारण हम किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं। बात करने का आत्मविश्वास बढ़ता है। अपने विचार अच्छी तरह से किसी को समझा सकते हैं। पुस्तक पढ़ने से हमारी कल्पनाशक्ति बढ़ती है। पुस्तक पढ़ने से याद करने की और याद रखने की क्षमता बढ़ती है। अकेलापन दूर होने में मदद होती है। दिनभर की थकान कम होती है। मन तरोताजा होता है।
- प्र.2. (1) (i) ऋत्तिक — पुस्तक मित्र के असली नाम — कृतिका
(ii) साथी — पुस्तकों से ऋत्तिक का नाता — मित्र
- (2) (i) (1) वहाँ सभी बच्चे अपनी मनपसंद पुस्तकें पढ़ने लगे।
(2) ऋत्तिक की नींद टूटी।

- (ii) (1) आगे चलकर ऋत्तिक बड़ा सा पुस्तक भंडार खोलेगा।
(2) अब तो पुस्तक ही ऋत्तिक के साथी हैं, मित्र है।

- (3) (i) (1) हिम + आलय = हिमालय
(2) देव + आलय = देवालय
(ii) (1) स्त्रीलिंग (2) पुल्लिंग
- (4) व्यक्ति के मन में अनेक कल्पना, लक्ष्य होता है कि मैं बड़ा होकर क्या बनूँगा? किसी को डॉक्टर, इंजिनियर बनने की चाहत होती है। मुझे अच्छा शिक्षक बनना है क्योंकि माँ के बाद बच्चों के भविष्य को आकार देने का काम शिक्षक ही करता है। किताबों का ज्ञान देने के साथ वे छात्रों के व्यक्तिमत्त्व का विकास करने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। मैं विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ खेलों का महत्त्व भी समझाऊँगा।

उनपर बड़ों का आदर करना, इमानदारी, सही-गलत की समझ ऐसे अच्छे संस्कार कर के उनको अच्छा और सजग नागरिक बनाना चाहता हूँ। अच्छी जानकारी अच्छे तरीके से छात्रों को समझाने की कोशिश करूँगा। समाज शिक्षक को सम्मान की नजर से देखता हूँ। उस सम्मान के पात्र बनकर छात्रों को विकास के पथ पर चलने की शिक्षा दूँगा ताकि वे बड़े होकर अपने देश के लिए कुछ कर सकें। उनके मन में अपनी संस्कृति, राष्ट्र के प्रति प्रेम उत्पन्न करने की मेरी कोशिश रहेगी। विद्यार्थी देश की नींव होते हैं और वह नींव शक्तिशाली बनाने के लिए मैं प्रयास करूँगा क्योंकि समाज का भविष्य उत्तम शिक्षक के हाथ में होता है।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (1) यह वाक्य परी ने ऋत्तिक से कहा है।
(2) यह वाक्य राहगीर ने ऋत्तिक से कहा है।
(3) यह वाक्य राहगीर ने ऋत्तिक से कहा है।
(4) यह वाक्य ऋत्तिक ने पुस्तक से कहा है।
- (आ) (i) अपनी माँ की बात सुनकर ऋत्तिक उदास हो गया।
(ii) जब यह (पोटली) मेरी नहीं है तो इसे खोलने का मेरा हक नहीं है।

(इ) (1) उत्तीर्ण (2) इमानदारी (3) पुस्तकालय




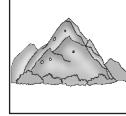



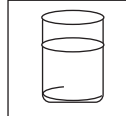

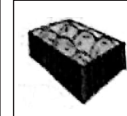
प्र.2. (अ) (1) - ग (2) - घ (3) - ड (4) - (क) (5) - (ख)

(आ) (i) (ii)

व्याकरण

प्र.1. (अ) सखा — साथी वृक्ष — पेड़
जननी — माँ भगिनी — बहन
नयन — आँख

(आ) (i) छोटा (ii) अनुत्तीर्ण (iii) प्रसन्न (iv) बेईमानी

(इ)  घर  नदी  अमरूद  पर्वत  अनाज
 चाबियाँ  बच्चे  दूध  बूढ़ा / वृद्ध  आम

(ई) (i) अर्थ : दुखी होना।

वाक्य : पाठशाला से विदा होते समय मेरी आँखें भर आईं।

(ii) अर्थ : निश्चय करना।

वाक्य : मैंने प्रतिदिन कसरत करना तय कर लिया है।

(iii) अर्थ : आश्चर्य करना।

वाक्य : घाटी का उबा देनेवाला रास्ता पार करने पर हिमालय का मनोरम दृश्य देखकर यात्री चकित हो गए।

(iv) अर्थ : नींद आ जाना।

वाक्य : दादी की कहानी सुनते-सुनते कब आँख लग गई पता ही नहीं चला।

उपयोजित लेखन

(1)

(i)

जल्दी कीजिए

जल्दी आइए

और लूट सको तो

लूट लीजिए।



ज्ञान का अक्षय भंडार

मनोरंजन अपार

हरभाषा में उपलब्ध

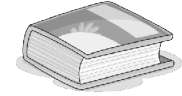
बैठकर पढ़ने की सुविधा

तो देर किस बात की

आज ही हमारे पुस्तकालय के मेंबर बनें।

अनमोल पुस्तकालय, ग्रामदेवी, अकोले।

☎ : ०२४२४-XXXXXXX



(ii)

खुशियाँ हैं वहाँ

खेलकूद हो जहाँ



आपके शहर में भव्य शो रूम का प्रारंभ

सभी प्रकार के खेलों का साहित्य उपलब्ध



किफायती दाम

मार्गदर्शक पुस्तकें भी उपलब्ध

प्रशिक्षण केंद्रों की जानकारी मुफ्त मुहैया

आज ही आकर अपना खेल पसंद कीजिए।

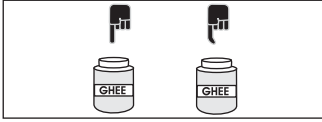




हमारा पता : ठक्कर बाजार, गाला नं. ३०, कोल्हापुर।

दूरभाष : ४३५XXXXXXX



4. जोकर

कृतिपत्रिका

- प्र.1. (1)  सीधी उँगली से घी न निकले तो उँगली टेढ़ी करनी पड़ती है।
- (2)  आम के आम गुठलियों के भी दाम।
- (3)  एक और एक ग्यारह होते हैं।
- (4)  आँखों का तारा
- (5)  आसमान सिर पर उठाना

- प्र.2. (1) हाथ साफ करना (2) हाथ पाँव मारना
(3) हाथ खींचना (4) हाथ मलते रह जाना।

- प्र.3. (1) सच (2) रूलाना (3) शुरू (4) अनुचित

उपयोजित लेखन

- ★ यदि साइकिल तुमसे बोलने लगी तो.....
बच्चो, मनुष्य की बहुत समय से इच्छा रही कि एक ऐसी मशीन बनाई जाए जिसे चलाने के लिए घोड़ा आदि जानवर या डिझेल, पेट्रोल, कोयला आदि की जरूरत न पड़े। वर्ष 1817 में जर्मन निवासी बैरन वान ने छकड़े के दो पहियों को लकड़ी के एक फ्रेम से जोड़कर मुझे जन्म दिया। तब मेरे पैडल नहीं थे, इसलिए चलाना मुश्किल होता था। फिर 1840 में मेरे अगले पहिए के साथ दो पैडल लगा दिए गए। अब चलाना तो आसान हुआ लेकिन ढलान पर रोकना मुश्किल होता था।

सन 1845 में फ्रांसीसी निकोलस ने मेरे ब्रेक फिट किए और सब ठीक हो गया। इस तरह उत्तरोत्तर मेरा रूप बदलता गया और आज गियर्स भी लग गए हैं।

आज यातायात के अनेक साधन उपलब्ध हैं, परंतु उनसे जुड़ी समस्याएँ भी कम नहीं। इन वाहनों की कीमतें, रखरखाव का खर्च देखेंगे तो समझ जाओगे कि मैं सबसे किफायती हूँ। मुझे चलने के लिए महँगी सड़कों की भी आवश्यकता नहीं। एक बित्ते की मेंड भी मेरे लिए पर्याप्त है। मैं अपने सवार को लेकर आराम से निकल जाती हूँ।

आज का युग गति का युग है। हर कोई पहले आगे बढ़ना चाहता है। ऐसे में सावधानी न बरतने से दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। कई बार लोगों को जान से हाथ धोने पड़ते हैं। पर आपने कभी सुना कि, दो साइकिल टकराने से दुर्घटना हुई और जान चली गई। मैंने कभी किसी की जान नहीं ली। अब दुनिया का नियम है कि संसार की सभी वस्तुओं का अंत होता ही है। मेरा भी होगा। लेकिन नुकसान अधिक न होने के कारण मेरे जाने पर गम भी ज्यादा नहीं होता। हूँ न मैं सबसे निराली। पर्यावरण का ख्याल रखनेवाली अद्वितीय सवारी। इसीलिए आजकल मेरी माँग बढ़ने लगी है। मेरे तो अच्छे दिन आ गए हैं।

★ चित्र की सहायता से बारहखड़ी के शब्द बनाकर लिखो।

- (2) कागद/काजल (2) किसान (4) कीमत (5) कुटीर
(6) कूकना (7) कमल (8) केकड़ा (9) कैलास
(10) कोयल (11) कौशिक (12) कंगन

5. (अ) आओ, आयु बताना सीखो

- प्र.1. (1) मेरी वर्तमान आयु 11 है। अगले वर्ष की मेरी आयु 12 होगी।
(2) मेरी वर्तमान आयु और अगले वर्ष की आयु को जोड़कर संख्या मिली $11 + 12 = 23$
(3) आई हुई संख्या को मैंने 5 से गुणा किया $23 \times 5 = 115$.
(4) प्राप्त हुई संख्या में जन्मवर्ष का इकाई अंक जोड़ें।
(जन्मवर्ष है 2003) $115 + 3 = 118$.

- (5) प्राप्त संख्या में से 5 घटा दिए - $118 - 5 = 113$.
 (6) प्राप्त संख्या में बाईं ओर के दो अंक मेरी वर्तमान आयु है।

उपक्रम

- (i) पंजाब (ii) तीन
 (iii) सूचना - Practice Book में चौखट में दिए हुए अंक न देखकर प्रश्न और उत्तर के लिए Answer key का उपक्रम (iii) देखे। जो आगे दिए हैं।

3		6	4	7		8		
7		9				2		6
	1		9		3		4	
3		1		7		8		4
8			3		4			2
4		2		5		6		3
		8		5		1		2
1		3				4		9
	2		4	3	9			

उत्तर

2	3	5	6	4	7	9	8	1
7	4	9	8	1	5	2	3	6
6	1	8	9	2	3	7	4	5
3	5	1	2	7	6	8	9	4
8	7	6	3	9	4	5	1	2
4	9	2	1	5	8	6	7	3
9	8	4	5	6	1	3	2	7
1	6	3	7	8	2	4	5	9
5	2	7	4	3	9	1	6	8

(आ) महाराष्ट्र की बेटी

- (i) दोनों की साड़ियों के रंग अलग हैं।
 (ii) दोनों के दुपट्टे का रंग अलग है।
 (iii) दोनों के ब्लाऊज का रंग अलग है।
 (iv) दोनों के हाथ पर बने चित्र अलग-अलग हैं।
 (v) दोनों के माथे पर लगी बिंदी के आकार अलग हैं।
 (vi) दोनों के गले में पहने हार में अंतर है।
 (vii) एक बेटी के चेहरे पर तील है।
 (viii) दोनों के माँग टीके का आकार अलग है।
 (ix) गुलाबी रंग की साड़ी की बॉर्डर पर डिजाइन अधुरी है।
 (x) दोनों के होठों पर लगी लिपस्टिक का रंग अलग हैं।

प्रकल्प

विद्यार्थी स्वयं कृति करें।

६. मेरा अहोभाग्य

कृतिपत्रिका

प्र.1. (1)

बहुत ही सुंदर

अतिथि भवन
इमारत की विशेषता

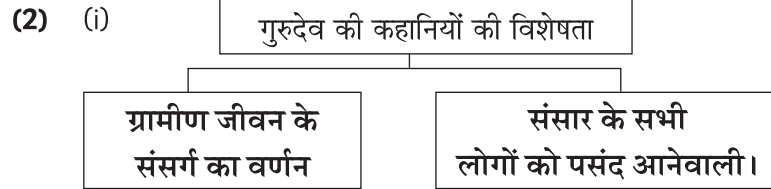
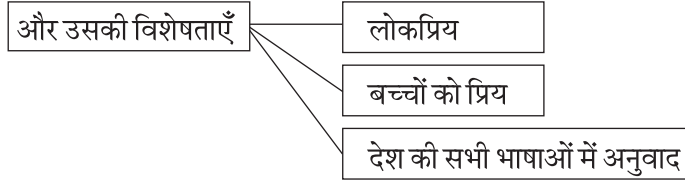
बहुत ही बड़ी

अशोक वृक्षों के
सघन उपवन के बीचोबीच

- (2) (i) अशोक, बकुल।
 (ii) कलकत्ता, शांति निकेतन।
 (3) (i) (1) पेड़ (2) सेहत
 (ii) (1) बेवजह (2) बेदाग

(4) हम किसी काम में असफल हो जाते हैं या किसी काम से संतुष्ट नहीं होते हैं तो हम निराश होते हैं। मन उदास होता है। हमारे मन में तरह-तरह के बुरे विचार आने लगते हैं। इससे बचने के लिए हमें दोस्तों को, अपने भाई-बहन, माता पिता को अपने मन की बात बतानी चाहिए। अच्छी किताबें पढ़नी चाहिए। खेल-कूद, कसरत में ध्यान देना चाहिए ताकि हमारे मन को आनंद मिले और उदासी चली जाए। दोस्तों के साथ उद्यान में घूमने चले जाए। मनोरंजन के कार्यक्रम देखें। अपने मन को खुशी मिलनेवाले किसी भी काम में व्यस्त रहे। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी वजह से आए हुए संकटों का सामना करने के लिए अपना आत्मविश्वास बनाएँ रखें।

प्र.2. (1) परिच्छेद में उल्लेखित कहानी का नाम - काबुलीवाला



- (ii) (1) दुनिया में मनुष्य का स्वभाव हर जगह एक सा होता है।
 (2) गुरुदेव ने तब कहानियाँ लिखनी शुरू की जब इस क्षेत्र में एक आध ही आदमी था।

(3) (i)

परिचित	=	परिचय	+	इत
अपमानित	=	अपमान	+	इत
सुगंधित	=	सुगंध	+	इत

- (ii) (1) शहरी (2) अंतिम

(4) हम कल्पना में विश्वास नहीं करते। हकीकत में विश्वास करते हैं। कल्पना मन की शक्ती है, ऊर्जा है। मन में आई हुई इच्छा, सोच हैं। हम यह करेंगे, ऐसे करेंगे यह हुई कल्पना। जो हमेशा पूरी नहीं होती लेकिन विज्ञान की सहायता से हम कल्पना हकीकत में बदल सकते हैं। जैसे यंत्रमानव, मोबाईल सिर्फ एक कल्पना ही तो थी लेकिन विज्ञान की मदद से रोबोट निर्मिती का सपना पुरा हुआ दिखाई दे रहा है। डोरेमॉन और नोबिता ये भी रोबोट हैं जिन्होंने गैजेट की सहायता से बहुत सी चीजें बदली। अगर हम मन में कुछ करने की इच्छा रखते हैं या कल्पना को हकीकत का रूप देना चाहते हैं तो कड़ी लगन और मेहनत की जरूरत है। हमारी कोशिशों से हम मन में आई हुई कल्पना को हकीकत में ला सकते हैं। फिर वह सिर्फ कल्पना नहीं रहेगी वह हकीकत में सच होती नजर आएगी।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (1) साहित्यिक कार्यक्रम शांतिनिकेतन में होने वाला था।
 (2) गुरुदेव की कहानियों में ग्रामीण जनता की मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं।
 (3) संस्मरण में गुरुदेव की 'काबुलीवाला' कहानी का उल्लेख किया गया है।
 (4) लेखक आनंद विभोर हुए क्योंकि नोबल पुरस्कार प्राप्त 'गीतांजली' जिस कमरे में रची गई उस कमरे में ठहरने का सौभाग्य उन्हें मिला था।

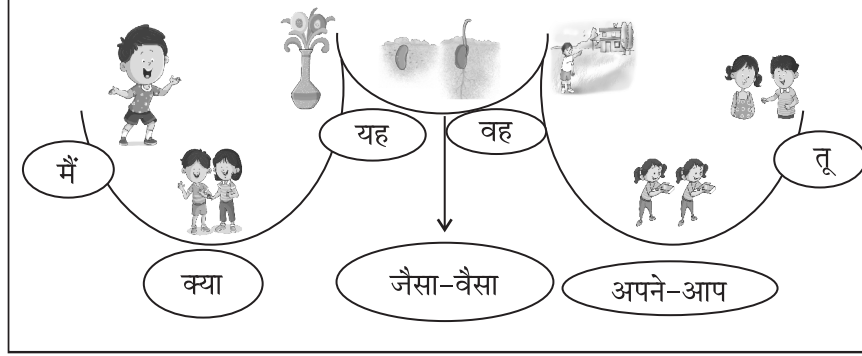
(आ) (1) साहित्यिक (2) बेसब्री

प्र.2. (अ) (1) - (क) (2) - (ड) (3) - (अ) (4) - (ब)

- (आ) (i) निश्चित दिन कलकत्ता से हम बहुत सारे लोग शांति निकेतन के लिए रवाना हुए।
 (ii) बरामदे में खड़ा होकर बाहर देखा जाए तो सामने ही सघन बकुल वृक्ष दिखाई देते थे।

व्याकरण

प्र.1



भाषा की ओर

(2)

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
भैंस	भैंसे	भैंसा	भैंसे
बिल्ली	बिल्लियाँ	बिलाव	बिलाव
घोड़ी	घोड़ियाँ	घोड़ा	घोड़े
नागिन	नागिनें	नाग	नाग
चुहिया	चुहियाँ	चूहा	चूहें
बेटी	बेटियाँ	बेटा	बेटे
देवरानी	देवरानियाँ	देवर	देवर
गाय	गाय	बैल	बैल
लड़की	लड़कियाँ	लड़का	लड़के
बंदरिया	बंदरियाँ	बंदर	बंदर

प्र.2. (अ) (i) खुशी का ठिकाना न रहना - अत्यंत प्रसन्न होना।

वाक्य : परीक्षा में मनोवांछित सफलता मिलने के पश्चात मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

(ii) भाव विभोर हो उठना - भावुक हो जाना।

वाक्य : कहानी पढ़कर मैं भाव विभोर हो उठी।

(आ) (i) समूह (ii) दोपहर (iii) उद्यान (iv) इमारत

(इ) (i) शहरी (ii) गम (iii) दुर्भाग्य (iv) साधारण।

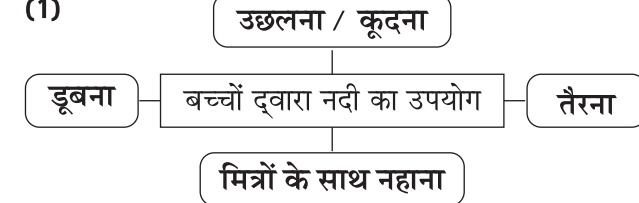
उपक्रम

विद्यार्थी स्वयं करें।
उपक्रम (१), (२)

7. नदी कंधे पर

कृतिपत्रिका

प्र.1. (1)



(2) (i) (1) आमंत्रित (2) बस (ii) (1) भद्र (2) उपस्थित

(3) बालक सोचते हैं कि अगर उनके बस में होता तो वे नदी को उठाकर घर ले आते और अपने घर के सामने उसे बहाते। उसमें उछलते-कूदते और अपने मित्रों के साथ नहाते।

प्र.2. (1) प्रभुदयाल श्रीवास्तव।

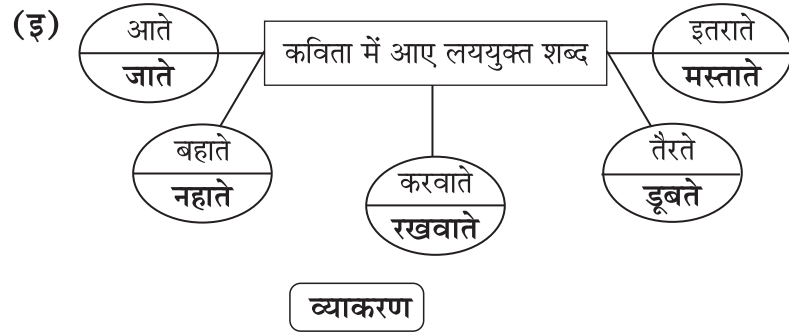
(2) शाम ढले फिर नदी उठाकर, अपने कंधे पर रखवाते।
लाए जहाँ से थे हम उसको, जाकर उसे वही रख आते।

(3) नदी कंधे पर उठाकर नहीं लाई जा सकती, लेकिन बालक की कल्पना सबकुछ संभव कर देती है। बच्चों के मनोभावों को इस पंक्तियों द्वारा कविने व्यक्त किया है। इसलिए ये पंक्तियाँ मुझे पसंद हैं।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. (अ) (1) उछल-उछलकर (2) इतराते (3) चिल्लाते

(आ) (1) घर (2) झटपट (3) कंधे



प्र. 2. (अ) (1) कभी-कभी (2) शत्रु (3) अनुपस्थित (4) अभद्र

(आ) (i) अर्थ - बुलाना।

वाक्य : मैंने अपने जन्मदिन पर अपने मित्रों को आमंत्रित किया।

(ii) अर्थ - काबू में होना।

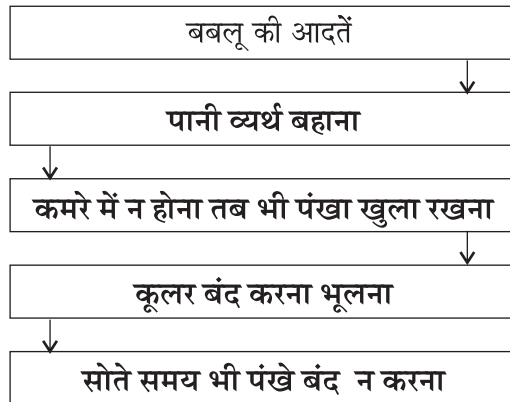
वाक्य : अगर मेरे बस में होता तो मैं रविवार को खत्म ही न होने देती।

(इ) (1) कप, (2) करधन, (3) कुली, (4) कौआ, (5) कौड़ी,
(6) कुट, (7) कुस, (8) कलक, (9) करू, (10) कनक

8. जन्मदिन

कृतिपत्रिका

प्र. 1. (1)



(2) (i) (1) बबलू को पानी और बिजली व्यर्थ खर्च करने की आदत थी।

(2) बबलू स्कूल में नल की टॉटी अकसर खुली छोड़ देता।

(ii)

परिच्छद में आए ऊर्जा भंडारों के नाम

पानी

बिजली

(3) (i) (1) माता - पिता (2) नहाना - वहाना

(ii) (1) विश्व, संसार (2) जल

(4) पानी प्राकृतिक संपत्ति है। पानी को बचाना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। पानी को सोच-समझकर इस्तेमाल करना चाहिए।

(1) ब्रश करते समय नल बंद रखना चाहिए।

(2) शॉवर इस्तेमाल करने के बजाय स्नान के लिए बाल्टी का इस्तेमाल करें।

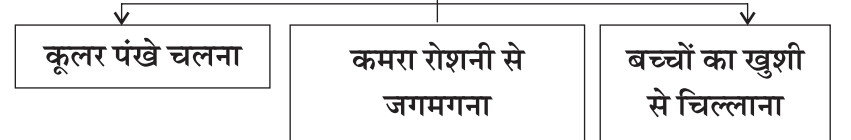
(3) सार्वजनिक स्थल के नल का पाइप अक्सर खराब होता है। उसकी सही समय पर मरम्मत कर लेनी चाहिए।

(4) बर्तन धोते समय नल की जगह बाल्टी या टब का इस्तेमाल करें।

(5) वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन करना। पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना जरूरी है।

प्र. 2. (1)

बिजली आ जाने का परिणाम



(2) (i) (1) कमरा किससे भर गया? (2) भोजन का स्वाद कैसा था?

(ii) (1) बिजली के आने से कमरा ठंडी हवा से भर उठा। बच्चे-बड़े सब ठंडे पानी के साथ भोजन का स्वाद लेने लगे इसलिए।

- (2) बबलू को सबक सीखाने के लिए शीला मौसी और माँ ने किया नाटक सफल हुआ था।
- (3) (i) (1) जगमगाहट (2) प्यासा
(ii) (1) खुशियाँ (2) पंखा
- (4) बिजली के अचानक चले जाने से अँधेरा हो जाता है। बिजली की सहायता से चलनेवाले टी.व्ही., फ्रिज, कुलर, पंखे बंद हो जाते हैं। अँधेरे में मोमबत्तियाँ, टॉर्च से काम चलाना पड़ता है। गरमी से सब परेशान हो जाते हैं। अँधेरे की वजह से लोग कोई भी काम नहीं कर सकते। ऊँची इमारतों में रहने वालों की तकलीफ लिफ्ट बंद होने से और भी बढ़ जाती है।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. (अ) (i) मंजन (ii) सन्नाटा

(आ) (i) (ii) (इ) (i) खाने (ii) प्यास

प्रश्न 2. (1) बबलू को पानी बरबाद करने की आदत थी। नहाते समय, मंजन करते समय वह देर तक पानी बहाता। नल की टॉटी भी अकसर खुली छोड़ देता जिसके कारण स्कूल में उसे डाँट पड़ती थी। वह बिजली भी व्यर्थ खर्च करता। काम न हो तो भी पंखा, कुलर या फिर बल्ब बंद नहीं करता था। बबलू की इस आदत से उसके माता-पिता दोनों परेशान थे।





(2) शीला मौसी की बेटी पूजा का जन्मदिन था। परंतु उनके यहाँ बिजली नहीं थी। क्योंकि आज उनके यहाँ बिजली कटौती हुई थी। गरमी बढ़ जाने से सब जगह बिजली का भार बढ़ गया था। इसीलिए कंपनी ने बिजली कटौती शुरू कर दी थी। आज उनके ब्लॉक में बिजली कटौती हुई और बारी-बारी दूसरे ब्लॉकों में बिजली कटौती की जाएगी ऐसा शीला मौसी ने बताया।

(3) शीला मौसी के यहाँ पार्टी में पानी भी पर्याप्त नहीं था। बबलू को प्यास लगी थी और सभी के गिलास में केवल आधा-आधा पानी से भरा था। बबलू ने सारा पानी एक घूँट में ही खत्म किया। इससे उसकी प्यास बूझी नहीं। और थोड़ा-बहुत खाने पर उसकी प्यास और भड़क उठी। वह बेचैन हो उठा। उसका गला सूखता जा रहा था। खाने का एक कौर भी गले से नीचे नहीं उतर रहा था। इस तरह वह प्यास के कारण छटपटाने लगा था।

- (4) बबलू कभी यह नहीं जान पाया कि शीला मौसी के यहाँ जन्मदिन की पार्टी में पानी और बिजली न होने के कारण जो कुछ हुआ वह एक नाटक मात्र था। माँ ने शीला मौसी को फोन पर बबलू की पानी और बिजली को बरबाद करने की आदत के बारे में बता दिया था। बबलू को सबक सिखाने के लिए मौसी ने बिजली कटौती और पानी न होने का नाटक किया जो पूरी तरह सफल हुआ था।

व्याकरण

प्र.1.

			
योजक चिह्न	निर्देशक चिह्न	इकहरा अवतरण	दोहरा अवतरण

प्र.2.

अड़ोस - पड़ोस, बारी - बारी
अच्छा - बुरा, नहाना - वहाना, हँसी - खुशी

प्र.3.

अक्र.	मराठी	अंग्रेजी	हिंदी
(1)	वीज	electricity	बिजली
(2)	पाणी	water	पानी
(3)	पोलीस	police	पुलिस
(4)	सवय	habit	आदत
(5)	चिमणी	sparrow	चिड़िया/ गौरैया
(6)	शेतकरी	farmer	किसान
(7)	धरण	dam	बाँध
(8)	नोकर	servant	नौकर
(9)	सावली	shadow	परछाई
(10)	झोप	sleep	नींद

- प्र.4. (अ) (i) अर्थ : धूम मचाना।
वाक्य : छुट्टियों में बच्चे खूब धमा-चौकड़ी मचाते हैं।
(ii) अर्थ : अत्याधिक प्रसन्न होना।
वाक्य : लॉटरी खुलते ही रामदयाल की बाँछें खिल उठी।

(आ) (i) ठंड (ii) कोलाहल (iii) निरुपाय (iv) भीतर।

उपक्रम



(ii)

सुजय शर्मा,

अ/102, राम नगर,

अंधेरी (प.) मुंबई।

ता. 15 मई, 2022.

आदरणीय नाना जी,

सादर प्रणाम।

आप कैसे हो? नानी जी कैसी हैं? यहाँ सब कुशल मंगल है। मेरी गरमी की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। मैं वहाँ नहीं आ सका तो क्या मैं पत्र के जरिए अपने सारे समाचार आप तक पहुँचाता रहूँगा।

आज यहाँ समर कैंप में आए मुझे पाँच दिन हो गए हैं। शहर के शोर-गुल से दूर यहाँ बहुत अच्छा लगता है। हम लगभग 50 लड़के और 40 लड़कियाँ हैं और हमारे साथ 6 इंस्ट्रक्टर हैं जिनमें दो महिला इंस्ट्रक्टर भी हैं। चार चौकीदार भी हैं जो बारी-बारी हमारे कैंप की निगरानी करते हैं। साथ में दो रसोइए भी हैं जो हमारे नाश्ते-भोजन का बंदोबस्त करते हैं।

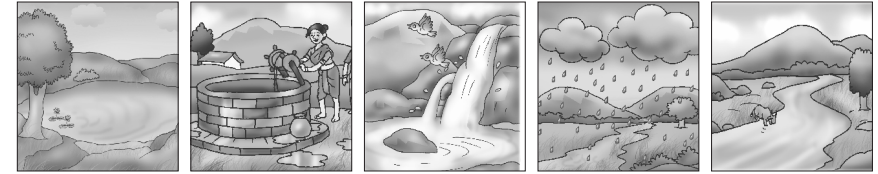
कल हमें पर्वतारोहन सिखाया गया। आज हमें रस्सी द्वारा नदी पार करना सिखाया जाएगा। प्रकृति की गोद में ये सबकुछ करते-करते हमारा दिन कब गुजर जाता है पता ही नहीं चलता। यहाँ मुझे बहुत कुछ सीखने मिल रहा है। शुरू-शुरू में अपनी चीजें समेटकर रखने में दिक्कत आ रही थी। पर अब उसकी भी आदत हो रही है और मैं घर जाने पर भी माँ को मेरी चीजें समेटने की तकलीफ नहीं दूँगा। कैंप के अगले पाँच दिन मुझे और भी बहुत कुछ सीखने मिलेगा।

अच्छा, नाना जी अब रखता हूँ। हमारे रात के भोजन का वक्त हो गया है और हमें बुलाने के लिए सीटी बज गई है। नानीजी को मेरा प्रणाम कहना।

आपका लाड़ला,

सुजय

अध्ययन कौशल



पहला चित्र तालाब का है। तालाब या पोखर जलभरा गड़ढा होता है। तालाब कृत्रिम या प्राकृतिक जलाशय है। जिसमें वर्ष में कम से चार महिने जल भरा रहता है।

दुसरे चित्र में कुआँ है। यह जल का मानवनिर्मित स्रोत है। यह पत्थरोंसे, चट्टानों से बनाया जाता है। गाँव में कुएँ ज्यादातर दिखाई देते हैं। पीने के पानी के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

तिसरा चित्र झरने का है। किसी पर्वत या अत्यंत उँचाई से बड़ी मात्रा में जल गिरता है तो झरना या जलप्रपात की निर्मिती होती है।

चौथे चित्र में बारिश दिखाई दे रही है। यह प्राकृतिक जलस्रोत है। पृथ्वी के उपर से पानी बाष्पित होकर उपर जाता है और ठण्डा होकर पानी की बूँदों के रूप में पुनः धरती पर गिरता है। बारिश का मौसम जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर चार महिने होता है।

पाँचवा चित्र नदी का है। कुछ नदियों में वर्षभर जल बहता रहता है। परंतु कुछ नदियों का जल गर्मियों में बहुत कम हो जाता है या वे सूख जाती हैं। यह जल पहाड़ियों से बहता हुआ नदियों में गिरता है।

ये पाँच जल के वे स्रोत हैं जो मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। जल के कारण पृथ्वी पर जीवन संभव है। क्योंकि पीने के लिए, सिंचाई, उद्योग, घरेलू कार्य सभी के लिए जल आवश्यक है और इनका संरक्षण और संवर्धन करना हर-एक व्यक्ति का कर्तव्य है।

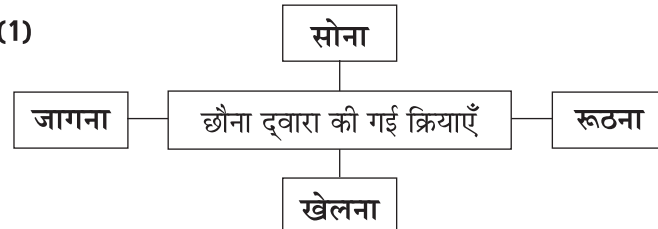
9. सोई मेरी छौना रे!

कृतिपत्रिका

- प्र.1. (1) (1) झूला - सोने का (2) फूल - चांदी के
(3) डोरी - रेशम की (4) लोरी - परियों की
- (2) (i) (1) चाँद सितारे (2) छौना
(ii) (1) लोरी (2) दीठ
- (3) मेरी बेटी सोने के झूले में सोई है। झूले की डोरी रेशम की है। उसे नींद लगी है और वह मीठे-मीठे सपने देख रही है। मैंने उसे परियों की लोरी सुनाई थी जो सुनकर वह सो गई है। यह मेरे नेत्रों की ज्योति है। संसार की हर बुरी नजर से बचाने के लिए मैंने इसके माथे पर काजल का टीका लगा दिया है।

चाँद-सितारे जाग रहे हैं। चांदनी नृत्य कर रही है। टिमटिमाते तारों को देखकर ऐसा लगता है कि आकाश में चाँदी के फूल खिले हैं। इन फूलों की चमक से मेरा आँगन भी दमक उठा है। आँगन में चाँद का शीतल प्रकाश फैला है।

प्र.2. (1)



(2) (i) माँ द्वारा छौना के लिए किया गया कार्य

गीत सुनाकर सुलाना

खिलौने की दुनिया की सैर करवाना

(ii) (1) सोए (2) सलोनी

(3) मेरी बेटी जब जागती है तो कभी खेलती है और कभी रूठती है। जब वह रूठ जाती है तो उसे देखकर हँसी आती है और मैं उसे मनाने लगती हूँ। उसे मनाने के लिए मैं खिलौनों की दुनिया की सैर करवा देती हूँ और वह मान जाती है।

प्र.3. (1) डॉ. श्रीप्रसाद (2) लोरी

(3) गीत सुनाऊँ सोए तू, तू सोए औ गाऊँ मैं।

मेरा दीठ दिठौना रे ! सोई मेरी छौना रे !

(4) इन पंक्तियों द्वारा माँ का वात्सल्य, प्रेम प्रकट हो रहा है। माँ अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है। इस पंक्तियों में भी माँ कह रही है मैं गीत गाती रहूँ और मेरी बेटी सोती रहे। दुनिया की हर नजर से वह अपने बेटी को बचाने के लिए काजल का टीका लगाती है। इसलिए मुझे यह पंक्तियाँ पसंद हैं।

स्वाध्याय

प्र. 1. (i) चाँद सितारे जाग रहे, नाच रही है चाँदनिया।

फूल खिले हैं चाँदी के, फूली मेरी आँगनिया।

(ii) मेरा सुख अनहोना रे, सोई मेरी छौना रे !

गीत सुनाऊँ सोए तू, तू सोए औ गाँऊँ मैं।

प्र. 2. (अ) (i) सोई (ii) जाग

(आ) (i) कडवी/ खट्टी (ii) जागना (iii) पाना (iv) मनाना

(इ) मराठी अर्थ समोच्चारित शब्द हिंदी अर्थ

रुचि	कल	आनेवाला या बिता हुआ दिन
हस्ताक्षर	← सही →	ठीक, सत्य या प्रामाणिक, सच
गहरा	← खोल →	आवरण
माँ	← आई →	आना क्रिया का भूतकाल
फिर से	← परत →	स्तर, तह
	← →	

उपयोजित लेखन

यदि मेरे मामा का घर चाँद पर होता तो.....

कितनी सुंदर कल्पना है। सच में अगर ऐसा होता तो मैं बहुत खुश होता। यदि मेरे मामा का घर चाँद पर होता तो मैं रोज आसमान की सैर करता। वहाँ मुझे चलने की जरूरत ही नहीं पड़ती क्योंकि मैं इतना हलका होता की मैं हमेशा तैरता ही रहता। सुंदर तारों को, काले-काले बादलों को हाथ लगाता, उनके साथ हँसता-खेलता, बादलों पर उछलता-कूदता उनका पानी पिता। आसमान से ही मुझे बारिश देखने को मिलती। सचमुच कितना अच्छा होता। आकाश में उड़ते पंछियों को नजदीक से देखता। चाँद से मैं नीचे धरती पर देखता। धरती पर पर्वत, सागर, बहती नदियाँ, घने जंगल, झरनें हैं उन्हें देखकर कितना खुश होता। मुझे धरती के प्राकृतिक सौंदर्य का नजारा चाँद पर बैठे-बैठे दिखाई देता।

चाँद पर रहने के कारण धरती की भीड़ भाड़ से, प्रदूषण से मुझे छुटकारा मिलता। प्रदूषण से होनेवाली बिमारी से मैं बच जाता। प्रदूषणमुक्त और स्वस्थ जीवन हँसते खेलते बिताता।

विद्यार्थी अपनी कल्पना से आगे लिखने की कोशिश करे।

स्वयं-अध्ययन

- प्र. 1. (अ) (i) अठारह, सत्रह (ii) चौहत्तर, बहत्तर (iii) चौरानवे, पचानवे
(iv) सैंतालीस, पैतालीस (v) बाईस, तेईस, पच्चीस
(आ) (i) पंद्रह (ii) नवासी (iii) अट्ठावन (iv) छह

- (v) तैंतालीस (vi) चौहत्तर (vii) बत्तीस (viii) इक्कीस
(ix) अड़सठ (x) सैंतीस।

- (इ) (i) - च (ii) - क (iii) - घ (iv) - ग (v) - ख

1 से 100 अंक अक्षरों में

एक	इक्कीस	इकतालीस	इकसठ	इक्यासी
दो	बाईस	बयालीस	बासठ	बयासी
तीन	तेईस	तैंतालीस	तिरसठ	तिरासी
चार	चौबीस	चवालीस	चौंसठ	चौरासी
पाँच	पच्चीस	पैंतालीस	पेंसठ	पचासी
छह	छब्बीस	छियालीस	छियासठ	छियासी
सात	सत्ताईस	सैंतालीस	सड़सठ	सतासी
आठ	अट्ठाईस	अड़तालीस	अड़सठ	अठासी
नौ	उनतीस	उनचास	उनहत्तर	नवासी
दस	तीस	पचास	सत्तर	नब्बे
ग्यारह	इकतीस	इक्यावन	इकहत्तर	इक्यानवे
बारह	बत्तीस	बावन	बहत्तर	बानवे
तेरह	तैंतीस	तिरपन	तिहत्तर	तिरानवे
चौदह	चौंतीस	चौवन	चौहत्तर	चौरानवे
पंद्रह	पैंतीस	पचपन	पचहत्तर	पचानवे
सोलह	छत्तीस	छप्पन	छिहत्तर	छियानवे
सत्रह	सैंतीस	सत्तावन	सतहत्तर	सतानवे
अठारह	अड़तीस	अट्ठावन	अठहत्तर	अठानवे
उन्नीस	उनतालीस	उनसठ	उनासी	निन्यानवे
बीस	चालीस	साठ	अस्सी	सौ

पुनरावर्तन - १

प्र.1. (अ)

स्वर:	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अँ
व्यंजन:	क	ख	ग	घ	ङ		
	च	छ	ज	झ	ञ		
	ट	ठ	ड	ढ	ण		
	त	थ	द	ध	न		
	प	फ	ब	भ	म		
	य	र	ल	व			
	श	ष	स	ह	ळ		
	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

(आ) अनमोल, अहोभाग्य, कविता, कहानी, चाँद, छुट्टी, छौना, डॉक्टर, धमा-चौकड़ी, बबलू, मस्त, मेला, साहित्य, सितारे।

प्र.2.

ज्ञानदीप विद्यालय का रंगारंग स्नेह संमेलन

दि. 10 सितंबर, 2020 को ज्ञानदीप विद्यालय का स्नेह संमेलन मातोश्री प्रमिलाबेन सभागृह में धूमधाम से संपन्न हुआ। समारोह का अध्यक्षपद मशहूर कलाकार समीर वाजपेयी ने विभूषित किया। इस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि, पाठशाला के आजी-माजी विद्यार्थी एवं अभिभावन उपस्थित थे। ईश-स्तवन से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। चौथी कक्षा के छात्रों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात विद्यालय के निरीक्षक पांडे सर ने अध्यक्ष महोदय का परिचय दिया और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। अध्यक्ष महोदय के करकमलों द्वारा होनहार छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गए थे। जो सभी इतने अच्छे थे कि कई दिनों तक चर्चा का विषय बने रहे। भारतीय त्योहार विषय रखा गया था

और उसके अनुरूप नृत्य, गीत, एकांकी नाटक आयोजित किए गए थे। जो मराठी, अंग्रेजी और हिंदी भाषा में प्रस्तुत किए गए।

अध्यक्ष महोदय ने इस कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की और विद्यार्थियों को उनके सुनहरे भविष्य की कामना करते हुए शुभाशिष दिया। ज्येष्ठ शिक्षिका श्रीमती कमला जी ने धन्यवाद यापन किया और राष्ट्रगीत के साथ इस रंगारंग कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्र.3.

* दर्द अनेक, इलाज एक *

- आज ही आइए, लाभ उठाइए।
- 'योग' सभी के लिए।
- अपनी सुविधा के अनुसार समय चुनिए
- अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।
- ★ प्रगति योग शिबिर, महात्मा गांधी मैदान, पुणे।
- ☎ 020-2673XXXX



प्र.4.

फलों के नाम : (i) आम (ii) अंगूर (iii) केला (iv) कटहल
(v) पपीता (vi) सेब (vii) बेर (viii) लीची
(ix) अनार (x) जामुन।

फूलों के नाम : (i) कमल (ii) गुलाब (iii) गेंदा (iv) चमेली
(v) जूही (vi) गुड़हल (vii) सूरजमुखी
(viii) रजनीगंधा (ix) चंपा (x) लीली

प्र.5.

- (1) साइना नेहवाल (2) ध्यानचंद (3) खाशाबा जाधव
- (4) मिल्खा सिंह (5) मेरी कॉम (6) सानिया मिर्जा
- (7) सचिन तेंडुलकर

उपक्रम

- (i) बचपन के दिन होते ही ऐसे सुहाने कि उनकी यादों के सहारे उन्हें बार-बार जी लेने का मन करता है। मैं अकसर अपने माता-पिता को अपने बचपन की बातें सुनाने का अनुरोध करती रहती हूँ और जितना मजा मुझे सुनने में आता है उतना ही उन्हें बताने में आता है यह भी मैंने गौर किया है।

एक बार मैं रूठ गई थी और कमरे का दरवाजा बंद करके बैठ गई। थोड़ी देर बाद माँ ने मुझे दरवाजा खोलने को कहा तो मैंने उसे ही डाँटा और कहा कि मैंने उसे बंद कर दिया है अब पापा आने तक उधर ही कमरे में बंद रहो, खोलूँगी ही नहीं। मेरा अबोध मन समझ ही नहीं पाया कि मैंने माँ को नहीं बल्कि खुदको ही बंद कर लिया है। फिर पापा आए तो मैंने माँ की खूब शिकायत की। फिर पापा ने माँ को झूठ-मूट का डाँटा भी और मुझे दरवाजा खोलने को कहा। लेकिन अब मेरे नन्हें-हाथों से दरवाजा खुल ही नहीं रहा था। इतनी देर शेर की तरह दहाड़ने वाली शेरनी अब भिगी बिल्ली बनकर पापा को कह रही थी, 'मुझे बाहर निकालो, दरवाजा नहीं खुल रहा।' आखिर में चाबीवाले को बुलाकर दरवाजा खुलवाया, तब तक माँ मुझे परी की कहानी सुनाती रही। और जैसे ही दरवाजा खुला मुझे बाहों में भरकर चूमने लगी। मेरी रूठनेवाली बात तो मैं कब की भूल चुकी थी।

(ii) पिछले वर्ष मुझे पाठशाला की ओर से आंतरशालेय कविता गायन प्रतियोगिता के लिए चुना गया था। मेरी अध्यापिका ने मुझे कविता लिख दी थी जो मैंने उनके मार्गदर्शन के अनुसार अच्छी तरह रट भी ली थी। मेरी अध्यापिका को मुझसे बहुत उम्मीद थी और मैं भी चाहती थी कि उनकी उम्मीद पर खरी उतरूँ।

जब मैं प्रतियोगिता के लिए दूसरी पाठशाला में पहुँची तो अन्य प्रतियोगियों को देखकर थोड़ी सहम गई थी। जब प्रतियोगिता शुरू हुई तो निर्णायक गण में हिंदी के बड़े-बड़े साहित्यिक थे। उनके सामने कविता का गान करना मुश्किल लग रहा था। परंतु जैसे ही मेरा नाम पुकारा मैं मंच पर चली गई। माईक के सामने खड़ी थी तब मेरे पैर काँप रहे थे। परंतु मेरी शिक्षिका ने मेरी ओर मुस्कराकर देखा और मुझमें हिम्मत आ गई। और फिर पूरे आत्मविश्वास के साथ मैंने कविता सुना दी। सभागृह तालियों से गूँज उठा और मैं अपनी जगह आ बैठी।

जब निर्णय घोषित किया गया तो मुझे अपने कानोंपर विश्वास नहीं हो रहा था। मुझे प्रथम पुरस्कार मिला था। मेरी कामयाबी पर मेरी शिक्षिका की आँखों में स्नेह और खुशी के आँसू छलक आए थे। मैं उनकी उम्मीदों पर खरी उतरी थी। मैंने अपनी पाठशाला का नाम भी रोशन किया। मेरी तस्वीर अखबार में छपी। मेरे माता-पिता और मेरे साथी सबको मैंने खुशी दी थी मुझे इस बात का सुख मिला।

(iii) कर्तव्यपरायण

किसी गाँव में एक सुंदर तालाब था। पास ही एक नदी बहती थी। एक दिन तालाब ने नदी से कहा, “बहन, तुम बड़ी भूल करती हो, जो अपना मीठा जल समुद्र को दे देती हो। समुद्र उसे खारा बना देता है और तुम्हारा कोई एहसान भी नहीं मानता। इसलिए अच्छा होगा, यदि तुम अपने भविष्य के लिए इसे सँभालकर रखो। बुद्धिमान जो काम करते हैं, उसके बारे में पहले ही सोच लेते हैं।”

तालाब की बात सुनकर नदी मुस्कराई और बोली, “अरे भाई, हमें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। कर्म करते हुए उसके फल की



चिंता में नहीं पड़ना चाहिए। मैं अपने मीठे जल से समुद्र का भंडार भर रही हूँ। अब यह उसका कर्तव्य है कि वह उसे खारा रखे या मीठा। मैं तो अपने कर्तव्य का पालन करूँगी।”

नदी की बातें तालाब को अच्छी नहीं लगी। वह चुप हो गया।

गर्मी का मौसम आया। तालाब सूख गया। पर नदी उसी तरह स्वच्छ जल बाँटती रही। समुद्र को उसी गति से भरती रही।

समुद्र को भी अपने कर्तव्य का ज्ञान हुआ। आषाढ़ आया। समुद्र ने बादलों से मीठा जल बरसाया। नदी उमड़ आई और दूगने वेग से समुद्र का घर भरने लगी।

यह देख तालाब बड़ा लज्जित हुआ और समझ गया कि नदी ठीक कहती थी। दूसरों की टीका-टिप्पणी न करके हमें कर्तव्यपरायण होना चाहिए।

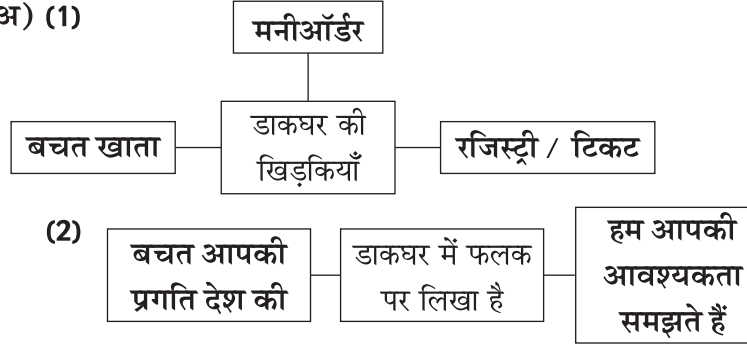
(iv) अखबार या मासिक पत्रिका से जानकारी इकट्ठा कर सकते हो।

प्राप्त जानकारी तिथि के अनुसार चिपकाए।

दूसरी इकाई

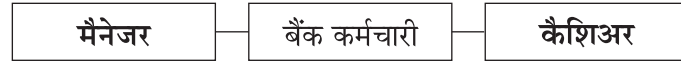
1. उपयोग हमारे

प्र.1. (अ) (1)

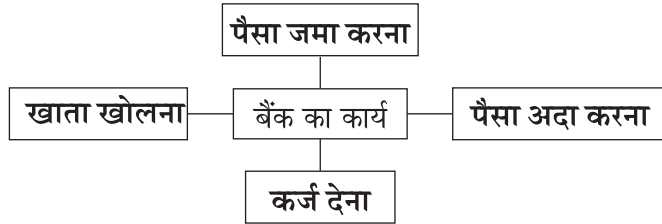


- (2)
- (आ)(i) डाकघर (ii) टिकट
 (iii) मनीऑर्डर (iv) पोस्टकार्ड
 (v) किसान विकास पत्र (vi) राष्ट्रीय बचत पत्र
 (vii) लिफाफा (viii) रजिस्ट्री
 (ix) डाकिया (x) पोस्ट मास्टर

प्र.2. (1)



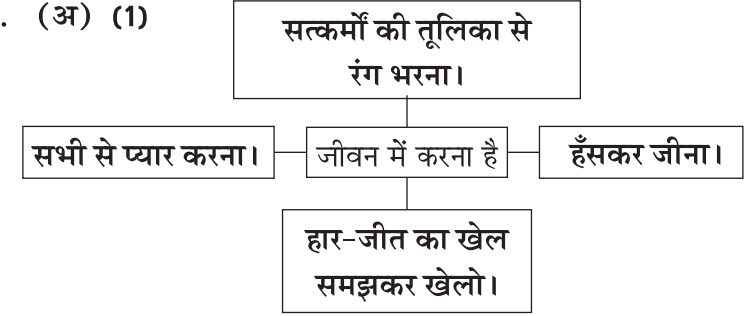
(2)



2. तूफानों से क्या डरना

कृतिपत्रिका

प्र.1. (अ) (1)



- (2) (i) (1) मदद सब लोगों की। (2) खेल समझकर।
 (ii) (1) बढ़ाकर (2) इनसे
- (3) कवयित्री हमें कह रही हैं कि हमें सभी से प्यार करना चाहिए। हम किसी से नफरत न करें। जिंदगी में तूफान (मुसीबतें) तो आते रहेंगे। हमें उनसे डरना नहीं चाहिए। जो हिम्मत के साथ आगे बढ़ेगा उसे सब लोगों की मदद भी मिलेगी। अपने जीवन में सत्कर्मों की तूलिका से रंग भरने हैं।

प्र.2. (1)

- (i) दीप - आत्मज्ञान (ii) सवेरा - रात का अंत
 (iii) जीवन - धूप-छाँव (iv) महामारी - देह - अभिमान

- (2) (i) (1) समय एक सा कभी नहीं रहता।
 (2) जिंदगी में तूफान तो आते रहेंगे।
 (ii) (1) देह (2) महामारी
- (3) शरीर के बल और सौंदर्य का घमंड ही वे कारण हैं जो भीषण युद्ध की जड़ें हैं। संक्रामक बीमारियों के कारण हैं। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम सबको सही राह दिखाएँ। आत्मज्ञान के दीप जलाकर हमें अपने मन का अँधेरा दूर करना है। तभी तो हम दुनिया से प्यार कर पाएँगे और नफरत को मिटा पाएँगे। जीवन में तूफान आते रहेंगे। इनसे डरना नहीं उनका सामना करना।

प्र.3. (1) शिखा शर्मा।

- (2) हिम्मत करनेवालों को, मिलती मदद सब लोगों की, सत्कर्मों की तूलिका से, जीवन में रंग भरना जी।
- (3) हमें किसी भी मुसीबत का सामना करने के लिए हिम्मत करनी चाहिए तो हमें लोगों का सहयोग भी मिलेगा। सत्कर्म करते हुए खुशी से रंग भर दो। यह पंक्तियाँ काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। हमारा हौसला बढ़ाती हैं इसलिए मुझे ये पंक्तियाँ पसंद हैं।
- (4) जीवन में तूफान तो आते ही रहेंगे। हमें उनसे डरना नहीं चाहिए बल्कि हिम्मत से आगे बढ़ना चाहिए। हार-जीत हाथ बढ़कर खुशी से ले लो। जीवन में हमें सतत संघर्षशील रहने का संदेश मिलता है। मुसीबतों का अंत निश्चित होगा क्योंकि नई सुबह अवश्य आती है। इसलिए हिम्मत से काम लो। अच्छे कर्म करते रहो। सबको अच्छी राह दिखानी चाहिए यह संदेश मिलता है।

स्वाध्याय

- प्र.1. कविता 'तूफानों से क्या डरना' कवयित्री शिखा शर्मा की लिखी हुई है। इस कविता में उन्होंने जीवन में सतत संघर्षशील रहने का जीवन मूल्य प्रस्तुत किया है। वे कहती हैं जीवन में तूफान तो आते रहते हैं उनसे डरने की जरूरत नहीं बल्कि हिम्मत से मुकाबला करने की उमंग हो। सबके साथ प्यार से पेश आओ और अच्छे कर्म करके जीवन में खुशियों के रंग भर दो। जीवन को हार-जीत का खेल समझकर खेलो और जो भी प्राप्त हुआ उसे खुशी से ले लो। जब तक जिंदगी जिओ हँसी-खुशी से जिओ। जीवन में सुख-दुख आते जाते रहते हैं। अतः दुख के अँधेरों में डरने की जरूरत नहीं बल्कि धीरज से आगे बढ़ो। सबको सच्ची राह दिखाओ और लोगों के जीवन से अँधेरा दूर करो।

- ★प्र.2. (अ) (1) थोड़ा धैर्य रखना चाहिए।
(2) हिम्मत करते हुए आगे बढ़ते हैं।

- (आ) (1) बढ़ाकर (2) सच्ची
(इ) (1) तूलिका (2) सवेरा
(ई) (1) (2) (3)

व्याकरण

- (1) (i) जीवन × मृत्यु (ii) खुशी × गम
(iii) अंत × आरंभ (iv) लंबी × छोटी
(v) दूर × पास

उपयोजित लेखन

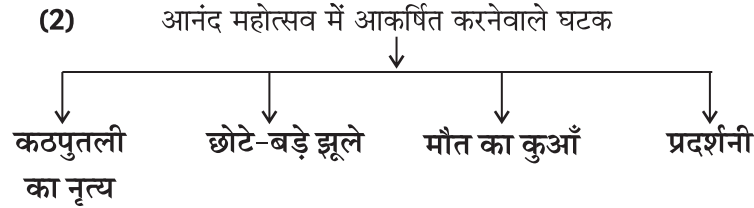
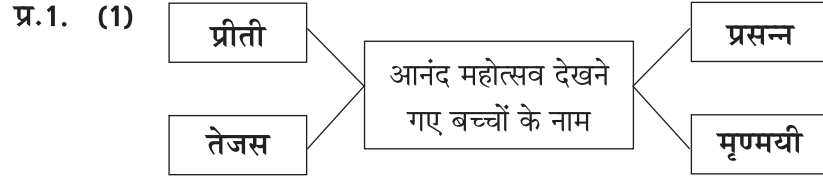
- (1) 'समय का यह चक्र कहीं हम रोक पाते तो समय की कमी का कभी बहाना न बनाते।'

अगर हम बातें करने बैठेंगे तो कोई हमें याद नहीं दिलाएगा कि देर हो गई है अब बस भी करो। पर ऐसा हमारा भाग्य कहाँ। समय का यह पहिया तो रुकने का नाम ही नहीं लेता। क्षण-क्षण यह परिवर्तन करता रहता है। अगर रुक गया तो यह धरती चित्र की भाँति स्थिर नजर आएगी। कुछ समय के लिए भले ही अच्छा लगे पर हर वक्त उसे देखना उबा देनेवाला होगा। मैं तो छठी कक्षा में ही पड़ा रहूँगा। बापरे! आगे बढ़ूँगा कैसे समय का चक्र जो रूका होगा। साथ में प्रगति भी ठप्प।

जब हम दोस्तों के साथ खेलते हैं या कहीं सैर सपाटे पर निकल जाते हैं तब लगता है समय की गति बढ़ गई है और कभी किसीका इंतजार हो तो लगता है उसकी गति धीमी पड़ गई है। वास्तव में यह हमारे मन के खेल हैं। समय की अपनी गति है और वह कभी न रुकी है न रुकेगी। हमारे मन को धैर्य धारण करने के लिए समझाया जाए तो समय के खेल का मजा उठा पाएँगे। दुख की घड़ियाँ बोझ न लगेंगी और असफलताएँ हमें कमजोर नहीं बना पाएँगी। हम समय के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सकेंगे और सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

3. कठपुतली

कृतिपत्रिका

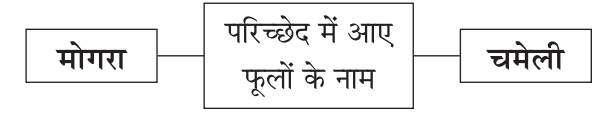


- (3) (i) (1) छोटे-बड़े (2) शकुन-अपशकुन
(ii) (1) झूला (2) कठपुतलियाँ

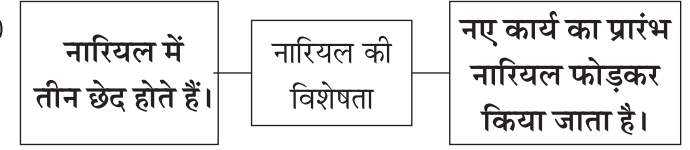
(4) शकुन-अपशकुन समाज में प्रचलित एक कल्पना हैं। इसमें कुछ अच्छी-बुरी घटनाएँ हमारे भविष्य का संकेत देती हैं। अच्छा भविष्य बतानेवाले संकेतों को शुभ-शकुन और बुरा भविष्य बतानेवाले संकेतों को अपशकुन माना जाता है। संसार में बहुत से लोग शकुन-अपशकुन पर विश्वास रखते हैं। काली बिल्ली द्वारा रास्ता काट जाना, बाँई आँख फड़कना, शुभ काम करने जाते समय दही खाकर जाना, किसी काम करने जाते वक्त किसी का छींक देना, कौआ का चिल्लाना, छिपकली गिरना आदि समाज में चले आए शकुन-अपशकुन हैं।

इन शकुन-अपशकुनों के चक्कर में आकर कभी-कभी लोगों को हानी भी होती है फिर भी वे इन्हें मानते ही हैं। शकुन-अपशकुन मनुष्य को कमजोर बनाते हैं। उनका आत्मविश्वास कम करते हैं। जिनको खुद पर विश्वास नहीं, जो हिम्मत हार बैठे हैं वह लोग अपने कार्य न होने पर शकुन-अपशकुन का सहारा लेकर अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हटते हैं और अपना लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर सकते। विज्ञान इन शकुन-अपशकुनों को अंधविश्वास ही कहता है।

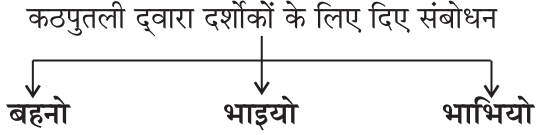
प्र.2. (1) (i)



(ii)



(2) (i)



(ii)



(3) (i)

- (1) आँख दिखाना। आँख खुलना।
(2) नाक कट जाना। नाक में दम आना।

(ii)

- (1) काँटे (2) आसमान

(4)

किसी भी बात को बिना सोच समझ के, बिना किसी आधार के मानना-अंधश्रद्धा है। सदियों से चली आयी हमारी मान्यताएँ, मृत्यु का डर, पाप से मिलनेवाला दंड, आर्थिक नुकसान आदि कई कारण हैं जो हमें अंधविश्वासी बना देते हैं। अंधश्रद्धा को दूर करने का एकमात्र उपाय है अपने आप पर भरोसा। कड़ी मेहनत, लगन और संकल्प से अपने पथ पर चलनेवालों को मंजिल मिल ही जाती है। अपने मन का डर भगाना होगा और हमें टोने-टोटके न कर कर्मठ बनना होगा, क्योंकि 'उद्यम से क्या हो सकता है पूछो, तुम इतिहास से।' सच्चाई को सहजता से स्वीकार करना होगा। तभी हम अंधश्रद्धा की दलदल से बाहर निकलेंगे। अंधविश्वास या अंधश्रद्धा को पूरी तरह से खत्म नहीं कर सकते लेकिन लोगों को अंधविश्वास का सहारा लेकर शोषण करनेवालों से बचाना चाहिए। लोगों को वैज्ञानिक दृष्टि से सोचना सीखाना चाहिए। उनके मन में

सकारात्मकता, आत्मविश्वास के जरिये लोगों को अंधश्रद्धा के प्रभाव से दूर रखने के लिए कोशिश करनी चाहिए। उन्हें श्रद्धा और अंधश्रद्धा का फर्क समझाने के लिए उचित मार्गदर्शन करना चाहिए। अंधश्रद्धा निर्मूलन कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। कर्म करने से ही इच्छित फल मिलेगा यह धारणा लोगों की अंधश्रद्धा कम करने में मदद कर सकती है। विज्ञान के इस युग में तर्क के आधार पर समस्या का हल ढूँढना चाहिए।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (i) महोत्सव (ii) विद्यार्थियों (iii) अंधविश्वास
(आ) (i) (ii)

- प्र.2. (अ) (i) सारी कठपुतलियाँ ठिठककर खड़ी हो गईं।
(ii) ऐसे ही छींकता हुआ आ रहा है।

- (आ) (i) नारियल (ii) ठिठककर (iii) अंधश्रद्धा (iv) मोहल्ला

व्याकरण

- (1) (1) पानी : अकाल के कारण पीने के पानी की समस्या बढ़ गई है।
(2) भीड़ : मेले में बहुत भीड़ थी।
(3) ईमानदारी : सारा शहर रामू की ईमानदारी की मिसाल देता है।
(4) हाथी : उस दिन चौपाटी पर मैंने हाथी की सवारी की।
(5) भारत : भारत में सर्वत्र विविधता में एकता दिखाई देती है।

(2)



(i) आप - आप हमारे प्रेरणा स्रोत हो।



(ii) हम - हम साथ में अध्ययन करेंगे।

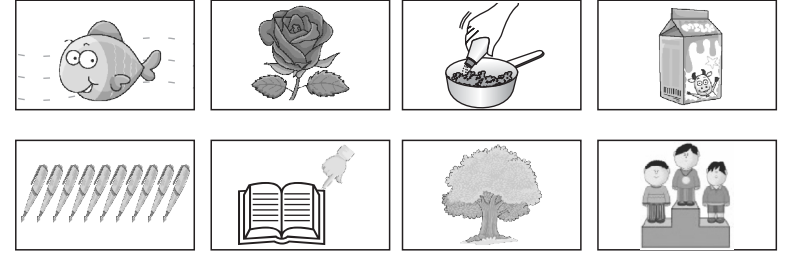


(iii) कोई - दरवाजे पर कोई है।



(iv) तुम - तुम मेरी मदद करोगी क्या ?

(3)



विशेषणयुक्त शब्द : काली मछली, सुंदर फूल, थोड़ा नमक, एक लीटर दूध, प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान, आठ कलमें, यह पुस्तक, हरा-भरा वृक्ष।

- (1) काली मछली तैर रही है।
(2) गुलाब का सुंदर फूल खिला है।
(3) सब्जी में थोड़ा नमक डाल दो।
(4) एक लिटर दूध दीजिए।
(5) मेरे पास आठ कलमें हैं।
(6) यह पुस्तक मैंने पढ़ ली है।
(7) मैदान में एक हरा-भरा वृक्ष है।
(8) प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आनेवाले बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

- (4) (i) अपशकुन (ii) निडर (iii) सुस्वागत
(iv) अव्यावहारिक (v) कुप्रथा (vi) भरपूर

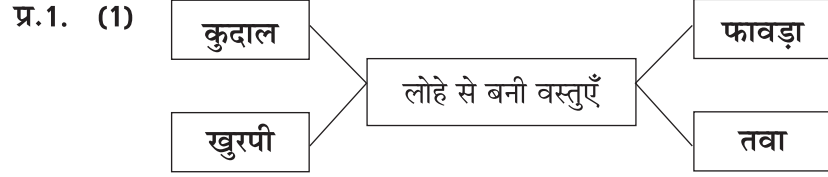
प्र.5. (अ) (i) अर्थ : पूरी तरह बरबाद करना।

वाक्य : शराब और जुए ने रमेश का घर बंटाधार कर दिया।

- (आ) (i) दोस्त (ii) शुरुआत (iii) सुमन, पुष्प (iv) छात्र
(इ) (i) अपशकुन (ii) अविश्वास (iii) विविधता/अनेकता (iv) अंत

4. सोना और लोहा

कृतिपत्रिका



- (2) (i) (1) उसके गुण ही ऐसे हैं।
(2) सोने का तिजोरी से बाहर आना खतरे से खाली नहीं।

- (ii) (1) सत्य (2) असत्य

- (3) (i) (1) नौकर-चाकर (2) पच्चीस-तीस

(ii)	मूल शब्द	उपसर्गयुक्त शब्द	प्रत्यययुक्त शब्द
(1)	रूप	कुरूप	रूपवान
(2)	मूल्य	अमूल्य	मूल्यवान

- (4) राजा हो या नौकर नम्रता सबसे बड़ा गहना है। राजा हो या नौकर मतलब अमीर हो या गरीब सबके पास नम्रता का गुण होना आवश्यक है। हमारे पास कितने भी सोने-चाँदी के गहने क्यों न हो लेकिन नम्रता सबसे बड़ा गहना है। जो हमारे व्यक्तित्व की शोभा बढ़ाता है, व्यक्तित्व में निखार लाता है। नम्रता से वह कार्य भी हो जाते हैं जो कठोरता से नहीं हो पाते। हम नम्रता से किसीसे मदद माँगते हैं तो कोई भी व्यक्ति हमें मदद करने की कोशिश जरूर करता है। विनम्रता श्रेष्ठता की पहचान है। कोई कितने ही उँचे पद पर हो अगर उसके पास नम्रता नहीं तो वो श्रेष्ठ नहीं है। नम्रता हमें सम्मान देती है। विनम्रता के कारण आपका शत्रु भी हथियार नीचे डाल देता है।

व्यवहार में नम्रता एक बड़ी शक्ति है। नम्रता हर किसी का हृदय जीत सकती है। सफलता के शिखर पर पहुँचना है तो नम्र होना जरूरी है क्योंकि नम्रता ही हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है, सर्वोत्तम गुण है। विनम्रता ही सब गुणों का आधार है।

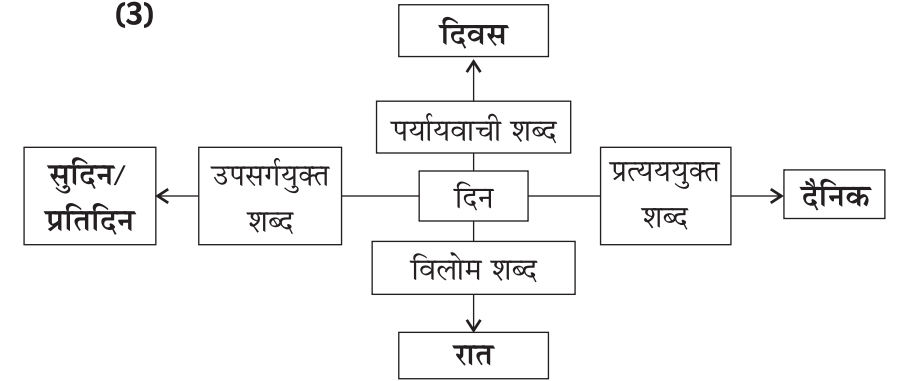
- प्र.2. (1) (i) राजा — सोना इतना प्यारा है — धनिक

- (ii) किसान — लोहा इनका प्यारा है — मजदूर

- (2) (i) (1) जो काम करेंगे, उन्हीं का सम्मान होगा।
(2) लोहा सदा सोने की रक्षा करता आया है।

- (ii) (1) कल - कारखानें (2) श्रम

- (3)



- (4) गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था,
'कर्मण्येवाधिकारस्ते'

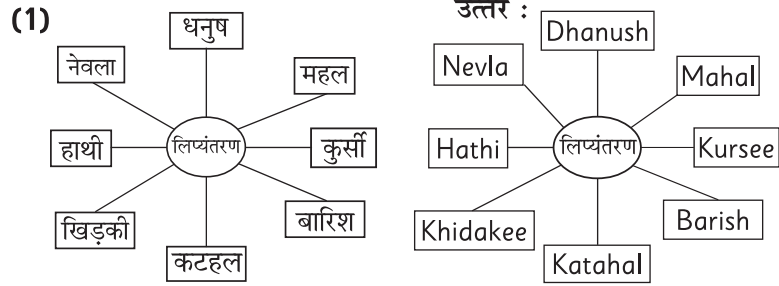
कर्म करना ही जीवन है और कर्म न करना मृत्यु के समान है। श्रम करके चित्त प्रसन्न होता है, देह तंदुरुस्त होती है। परिवार और समाज में सम्मान मिलता है। श्रम करनेवाला सदैव उन्नति की ओर अग्रेसर होता है। 'उद्यम से ही कार्य सिद्धि होती है।' ऐश्वर्य, वैभव आदि सब श्रम की ही देन है। श्रम ही उज्ज्वल भविष्य का निर्माता है। जहाँ श्रम की पूजा होगी वहाँ कोई भी कमी नहीं रह पाएगी।

आचार्य विनोबा भावे जी के शब्दों में 'परिश्रम' हमारा देवता है, जो हमें अनेक वरदानों से संपन्न करता है। श्रम ही जीवन है। श्रम न करनेवालों को अपमान, लाचारी, परतंत्रता के विषमय घूँट पीने पड़ते हैं। अतः श्रम की कुंजी से भाग्य के बंद कपाट का द्वार खोले और सुनहरे भविष्य का सुवर्ण कलश प्राप्त करें।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (1) गुण (2) अस्त्र-शस्त्र (3) घमंड
(आ) (1) सही (2) गलत (3) सही (4) गलत
- प्र.2. (अ) (1) तू तिजोरी से बाहर क्यों आया ?
(2) मुझे डाँटने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।
(आ) (1) मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ?
(2) मकान बनाना हो तो लोहा चाहिए।
(3) मैं तो आराम से रहता आया हूँ।
(4) मैं सदा तेरी रक्षा करता आया हूँ।

व्याकरण



(viii) अरे - अरे, कोई मेरी बात तो सुनो।

(4) (अ) (1) अर्थ : मदद करना।

वाक्य : छुट्टी के दिन मैं रसोई में माँ का हाथ बँटाता हूँ।

(2) अर्थ : बीती बात होना।

वाक्य : अब बैलगाड़ी में यात्रा करने के दिन लद गए हैं।

(आ) (i) मेहनत (ii) खोज (iii) कीमत (iv) संग्राम

(इ) (i) बाहर (ii) निरुपयोगी (iii) बड़ा (iv) अपमान।

उपयोजित लेखन

(1) 'खनिज तेल नहीं अपार, संरक्षण करें इसे हर बार।' तख्ती पर लिखा घोष वाक्य पढ़कर ख्याल आया कि खनिज तेल समाप्त हो गया तो? हमारे वाहन कैसे चलेंगे? और बिना वाहन के तो जिंदगी की रफतार ही रुक जाएगी। खाना पकाने की गैस नहीं होगी। कई कल- कारखाने बंद पड़ जाएँगे। उनमें काम करनेवाले हजारों श्रमिक बेरोजगार हो जाएँगे। देश की प्रगति रुक जाएगी। अतः हमें उसके संरक्षण हेतु उपाय योजना करनी चाहिए। खनिज तेल सीमित मात्रा में उपलब्ध है। अतः हमारा दायित्व बनता है कि इसका संरक्षण करें और आनेवाली पीढ़ी के लिए संभालकर रखें। इसके लिए जनजागृति की आवश्यकता है, खासकर स्कूली बच्चों में क्योंकि वे ही देश का भविष्य है।

(2) अंकुरित अनाज में भरपूर मात्रा में लगभग सभी पोषक तत्व होते हैं जो रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाते हैं, हिमोग्लोबिन, कैल्शियम, विटामिन और मिनरल्स इनमें पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इनसे हमें प्रोटीन मिलता है। ये वजन नियंत्रित रखते हैं, पाचनशक्ति बढ़ाते हैं। अंकुरित अनाज में फाइबर अधिक मात्रा में होता है। अतः कब्ज, गैस, अम्लपित्त की शिकायत नहीं रहती। वास्तव में यह ज्यादा पौष्टिक, कम खर्चीला, दुष्परिणाम रहित और बनाने में आसान एक लाभकारी भोजन है। यह एक प्राकृतिक पौष्टिक आहार है जो हमें चुस्त-दुरुस्त रखता है।

- | | |
|---------------------|------------------------------|
| (i) अंकुरित मूंग | (ii) अंकुरित मसूर |
| (iii) अंकुरित चना | (iv) अंकुरित मूँगफली के दाने |
| (v) अंकुरित गेहूँ | (vi) अंकुरित मोठ |
| (vii) अंकुरित चौलाई | (viii) अंकुरित मटर आदि |

5. (अ) क्या तुम जानते हो ?

- प्र.1. (अ) (i) मुंबई (ii) 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन (iii) स्पर्म व्हेल
(iv) मनाली-लेह सड़क (v) मिरजापुर (उत्तर प्रदेश)
(आ) (i) तक्षशिला (ii) 8 मार्च (iii) राजस्थान, गोवा
(iv) शुक्र (v) 29, 8

5. (ब) पहेलियाँ

- प्र. जल में, थल में रहता, मिट्टी धूप हवा से भोजन,
वर्षाऋतु का गायक। वह प्रतिदिन ही लेता है।
कहो कौन टर्-टर् करता, कहो कौन, जो प्राणवायु संग,
इधर उधर फुदक फुदक। छाया भी हमको देता है।

उत्तर: **मेंढक**

उत्तर: **पेड़**

अर्धचक्र और सतरंगी,
नभ में बादल का संगी।
कहो कौन, जो शांत मनोहर,
रंग एक है, जिसमें नारंगी।

उत्तर: **इंद्रधनुष**

उपक्रम

रंगबिरंगी पोशाक पहनता,
एक हाथ में छड़ी घुमाता,
हँसा-हँसाकर लोट-पोट करता,
बच्चों को वह प्यारा लगता।
बोलो कौन ?

उत्तर: **जोकर**

नहीं मैं मिलती बाग में,
आधी फल हूँ, आधी फूल
काली हूँ पर मीठी हूँ
खा के न पाया कोई भूल।
बोलो कौन ?

उत्तर: **गुलाबजामुन**

सारे तन में छेद कई हैं
इन छेदों का भेद यही है
ये ना हो तो मैं बेकार
इनसे ही है मेरा संसार
लाती हूँ सूरों की बहार

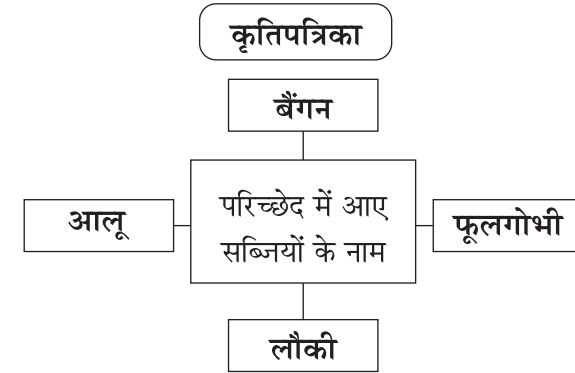
आदि कटे से सबको पारे।
मध्य कटे से सबको मारे।
अंत कटे से सबको मीठा।
खुसरो वा को आँखों दीठा।
बोलो कौन ?

उत्तर: **बाँसुरी**

उत्तर: **काजल**

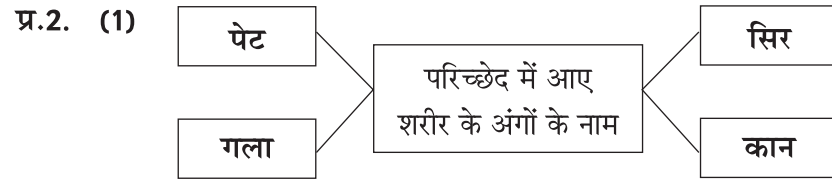
6. स्वास्थ्य संपदा

प्र.1. (1)



- (2) (i) (1) जैतून के तेल की जगह मक्खन लेना चाहिए क्योंकि मक्खन में जो विटामिन होते हैं वे जैतून के तेल में नहीं होते।
(2) क्योंकि इनमें स्टार्च होता है।
(ii) (1) चोकर (2) स्टार्च
(3) (i) (1) माखन (2) दुग्ध / क्षीर
(ii) (1) मात्राएँ (2) सब्जी
(4) अनेक प्रकार के सुखों में पहला सुख है 'निरोगी काया।' स्वास्थ्य ठीक रह सके इसके लिए संतुलित आहार का भी विशेष महत्त्व है। हमारा खान-पान सादा, ताजा, संतुलित और रुचिकर होना चाहिए। ज्यादा खट्टा-मीठा और चटपटा भोजन स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं। भोजन हमेशा समय पर और भूख लगने पर करना चाहिए।

संतुलित आहार शरीर को मजबूत बनाता है तथा रोगों से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। साथ ही यह दिमाग को भी तेज तथा स्वस्थ बनाता है। उसकी वजह से हम मानसिक रूप से भी मजबूत बनते हैं। एक स्वस्थ संतुलित आहार में वसा फैट और कोलस्ट्रॉल की मात्रा संतुलित होती है। अर्थात् उसमें फल, सब्जियाँ, उच्च फाइबर वाले अनाज आदि का समावेश होना चाहिए। सूखे मेवे जैसे अखरोट, बादाम, पिस्ता आदि को भी नियमित आहार का हिस्सा बनाना चाहिए। शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए भरपूर पानी पीना चाहिए। अंकुरित अनाज को भी नियमित भोजन का हिस्सा बनाना चाहिए। शरीर के कार्यों के लिए सभी महत्वपूर्ण और पोषक तत्व संतुलित आहार से ही प्राप्त होते हैं ये हमेशा ध्यान में रखें।



- (2) (i) (1) सोना, चाँदी।
 (2) अंगूर, मौसंबी, अनन्नास, संतरा, अनार, सेब।
 (ii) (1) फल अकेला खाने से उसके गुण बढ़ते हैं।
 (2) कंबल गले तक ओढ़ लिया हो और सिर तथा कान पर कपड़ा लपेट लो तो रात की सर्दी से डरने की जरूरत नहीं।

- (3) (i) (1) शाम (2) छाव
 (ii) (1) इजाजत (2) सर्वोत्तम

(4) अच्छे शरीर स्वास्थ्य के लिए व्यायाम बहुत आवश्यक है। व्यायाम करनेवाला व्यक्ति हमेशा तंदुरुस्त और शक्तिशाली रहता है। प्रतिदिन व्यायाम करने से मनुष्य का मन उत्साहित रहता है और शरीर में चुस्ती-स्फूर्ति आती है। व्यायाम करने से पाचन तंत्र अच्छा रहता है और भूख भी बढ़ती है। शरीर स्वस्थ हो तो दिमाग भी स्वस्थ होता है। सकारात्मक विचार मन में आते हैं। स्मरणशक्ति बढ़ती है। व्यायाम के बिना शरीर अस्वस्थ और कमजोर होता है और व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ, स्फूर्तिला और बलवान होता है। व्यायाम के कारण शरीर सुडौल बनता है तथा व्यक्तित्व

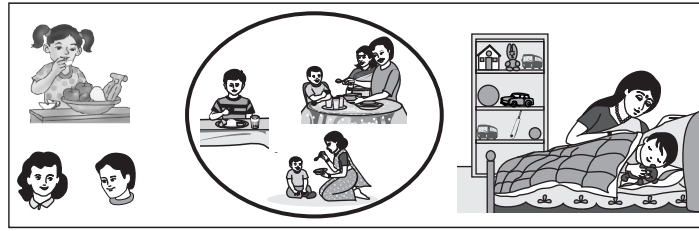
आकर्षक बनता है। मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ती है। व्यायाम करने से सारी बीमारियों से बचा जा सकता है। व्यायाम हर किसी के लिए जरूरी है। अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति बढ़ाने के लिए विद्यार्थी दशा में व्यायाम की अच्छी आदत डालनी चाहिए।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (i) उद्वेग (ii) गर्म (iii) प्राणायाम
 (आ) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य
- प्र.2. (अ) (i) जैतून के तेल की जगह मक्खन लेना चाहिए क्योंकि मक्खन में जो विटामिन होते हैं वे जैतून के तेल में नहीं होते।
 (ii) शरीर को एक अमानत समझकर यथासंभव उसकी रक्षा करना रक्षक का धर्म है।
 (iii) लौकी, भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जियाँ, फूलगोभी, पत्तागोभी, बिना बीज की सेम, बैंगन इन सबकी गिनती अच्छी, हरी सब्जियों में होती है।
 (iv) फेफड़ों के लिए शुद्ध-से-शुद्ध हवा अतिआवश्यक है जो श्वास के जरिए उनके अंदर जाए।
- प्र.3. (अ) (i) मेरी दृष्टि में जितने गेहूँ मिलते हैं उतने खाने की जरूरत नहीं।
 (ii) फल अकेला खाने से उसके गुण बढ़ते हैं।
 (आ) (i) गुड़ (ii) दूध (iii) सोना

व्याकरण

- (1) पाँच - प्रकार : संख्यावाचक
 वाक्य : मैंने पाँच पुस्तकें पढ़ीं।
 यही - प्रकार : सार्वनामिक
 वाक्य : तुम्हारी यही बात मुझे लगती है।
 कुछ - प्रकार : परिमाणवाचक
 वाक्य : यहाँ से कुछ मील की दूरी पर एक सुंदर झील है।
 मीठी - प्रकार : गुणवाचक
 वाक्य : बालक की मीठी बातें सब को अच्छी लगती हैं।



★(2)

(i) मीरा फल खाती है। (ii) चुटकुला सुनकर दोनों खिलखिलकर हँसने लगे। (iii) बच्चा खाना खाता है, माँ बच्चे को खाना खिलाती है और माँ ने पिता जी के हाथों बेटे को खाना खिलवाया। (iv) माँ बच्चे को सुलाती है। (v) अलमारी में खिलौने रखे हैं।

(3) (अ) (i) सेहत, तंदुरुस्ती (ii) धरोहर, थाती
(iii) वायु, पवन (iv) कंचन, हेम।

(आ) (i) भक्षक (ii) निर्दोष (iii) अशुद्ध (iv) नीचे।

(इ) (i) चाहिए (चाहना) (ii) लो (लेना)

(ई)	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थ रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i)	सोना	सुलाना	सुलवाना
(ii)	देखना	दिखाना	दिखवाना/ दिखलाना

उपयोजित लेखन

★ अपने मित्र को शुभकामना / बधाई पत्र लिखो।

अमर भीसे,
अ/204, राम नगर,
बाडनेर।
दि. 2 नवंबर, 2022.
प्रिय मित्र साहिल,
सप्रेम नमस्ते।

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की कोशिश कर रहा था पर समयभाव के कारण

सफल न हो पाया। वैसे यहाँ सब कुशल मंगल है और सब तुझे बहुत याद करते हैं। सबने तुझे बधाई भी दी है।

सच में मुझे गर्व है कि ऐसा होना लड़का मेरा मित्र है। साहिल ढेर सारी बधाई। तुम पूरे जिले में निबंध प्रतियोगिता में अक्वल आए। मैं तो इतना खुश हूँ। जी चाहता है कि तुझे गले से लगाकर बधाई दूँ। मुझे निबंध लिखने तो आते हैं पर तुम जैसे बहुत अच्छे नहीं। अगली बार मिलेंगे तब मुझे तेरा निबंध पढ़ने जरूर देना। तुम्हें किताबें पढ़ने का शौक है। इसीलिए तुम इतने अच्छे निबंध लिख पाते हो। मैंने भी अभी पुस्तकालय में नाम लिखवाया है और रोज किताब लाकर पढ़ने लगा हूँ। तुम मेरे प्रेरणास्रोत बन गए हो साहिल।

आ. चाचाजी और चाचीजी को मेरा प्रणाम कहना। रिकू दीदी को भी मेरी याद कहना। पत्र का उत्तर जरूर लिखना।

तुम्हारा मित्र,
अमर

टिकट
प्रति, साहिल शर्मा, 4/201, विजय नगर, पुणे। प्रेषक, अमर भीसे, अ/204, राम नगर, बाडनेर।

७. कागज की थैली

उपक्रम

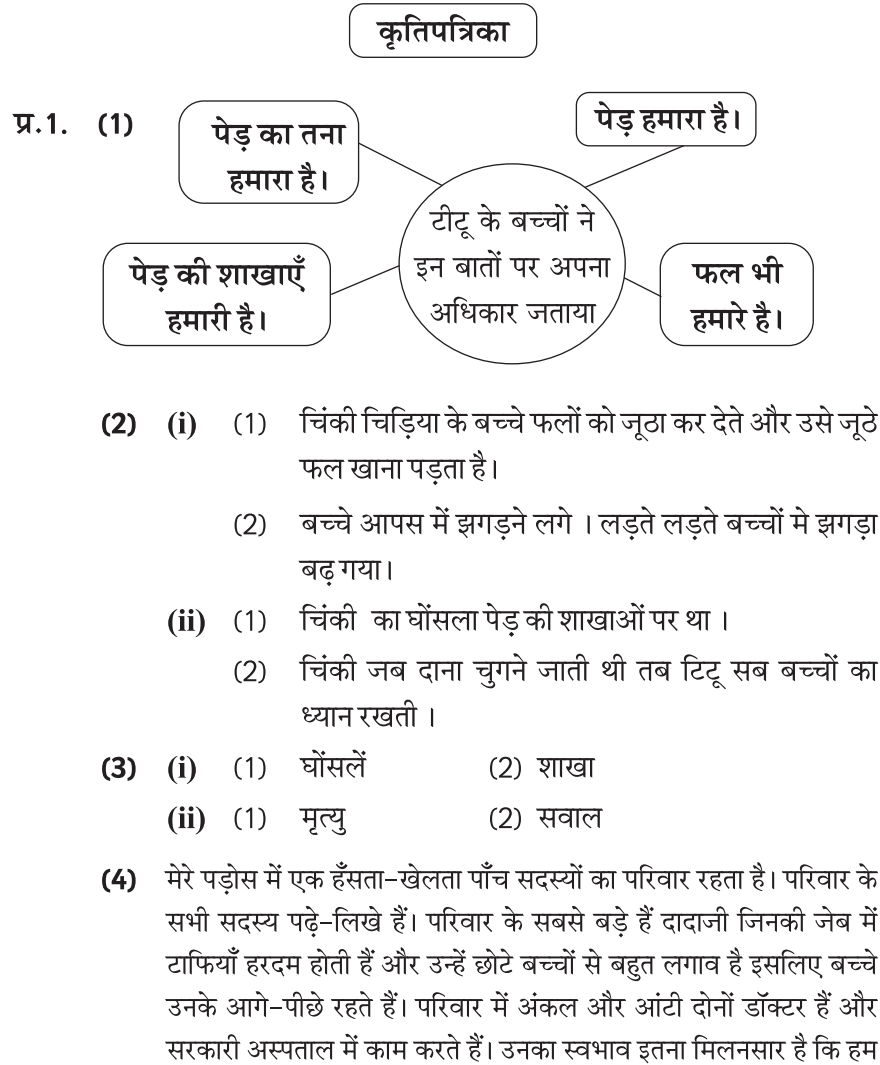
कागज से फलों की टोकरी और दिवाली में लगाया जानेवाला कंदील बना सकते हैं।

वस्तु : फलों की टोकरी सामग्री : रद्दी कागज, गोंद, कैंची, गत्ता।

विधि : गत्ते को गोलाकार काट लो जो टोकरी का तला बनेगा। कागज के पाइप

बनाकर उनकी चोटी बना लो। अब ये बनी हुई चोटी गत्ते पर चिपकाना शुरू करो। यह चोटी कुछ इस ढंग से चिपकाते जाओ की टोकरी का आकार बनता जाए। आप चाहो जितनी बड़ी बना सकते हो।

८. टीटू और चिंकी



बच्चे उनकी कड़वी दवाई और इंजेक्शन भी हँसते-खेलते ले लेते हैं और भले-चंगे हो जाते हैं। वे हमें हमेशा स्वच्छता का महत्त्व समझाते हैं।

उनके एक बेटा और बेटी हैं। दोनों पढ़ रहे हैं। बेटा बारहवीं में है और बाद में अपने माता-पिता की तरह डॉक्टर बनना चाहता है। बेटी दसवीं में है और आगे पायलट बनना चाहती है। मुझे अध्ययन में उन दोनों से बहुत मदद मिलती है। वे हमारे पड़ोसी हैं लेकिन हमें हमेशा लगता है कि जरूर पिछले जन्म का नाता रहा होगा हमारा !

- प्र.2. (1) (क) चिंकी ने अंडे दिए। (ड) आसमान में अँधेरा छा गया।
(अ) तेज हवाएँ चलने लगी। (ब) पानी बरसने लगा।
- (2) (i) (1) पानी नीचे बहता हुआ चिंकी और टीटू के घर तक पहुँचने लगा।
(2) घोंसले में रखे अंडे गिर कर फूट जाएँगे।
(ii) (1) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
(2) घोंसला।
- (3) (i) (1) जल (2) आकाश, नभ
(ii) (1) सु (2) इत
- (4) हम मिलजुलकर कठिन से कठिन काम आसानी से कर सकते हैं। अकेले व्यक्ति को मुसीबतों का सामना करना मुश्किल हो जाता है। मिलजुलकर मुसीबतों का सामना करते समय हमारी हिम्मत बढ़ जाती है। एक-दूसरे की राय लेकर हम समस्या सुलझाने की कोशिश कर सकते हैं। मिलजुलकर रहने में शक्ति है। अकेले व्यक्ति को हानी पहुँचाना आसान होता है। मिलजुलकर रहने से एकता बनी रहती है। हमारा मनोबल बढ़ता है और परेशानियाँ दूर होती हैं। मुसीबत कहकर नहीं आती तब अकेले व्यक्ति का आत्मविश्वास कमजोर पड़ जाता है। मिलजुलकर मुसीबतों का हल निकालने से ही हमारी जीत हो सकती है।

स्वाध्याय

- प्र.1. टीटू और चिंकी दोनों पड़ोसिन थी। टीटू का घर जिस पेड़ के खोखल में था उसी पेड़ की शाखाओं पर चिंकी का घोंसला था। दोनों एक-दूसरे की मदद करती थी।

जब उन्होंने अंडे दिए थे तब तेज हवाओं के साथ जोरदार बरसात हुई थी। उस मुश्किल की घड़ी में दोनों ने मिल-जुलकर अपने अंडों की रक्षा की थी और जाना था कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

अब उनके बच्चे हो गए थे। एक दिन वे आपस में झगड़ बैठे। उनकी माताओं ने उन्हें समझाया पर दोनों एक ही बात पर अड़े थे कि पेड़ उनका है। दोनों एक-दूसरे को पेड़ से भगाने पर तुले थे। अंत में दोनों माताओं ने बच्चों के साथ पेड़ छोड़कर जाने का फैसला लिया।

उनका यह तमाशा बिल में छिपा साँप देख रहा था। मौका मिलते ही वह बाहर निकल आया और पेड़ पर चढ़ने लगा। वह सोच रहा था कि पहले गिलहरी के बच्चों को निगलेगा। परंतु उसे पेड़ पर चढ़ते हुए चिंकी ने देख लिया। उसने गिलहरी को सावधान किया और बच्चों को खोखल से निकालकर उसके घोंसले में लाने को कहा। फिर वह पेड़ के तने पर अपनी चोंच मारती रही। जहाँ-जहाँ उसने चोंच मारी थी वहाँ-वहाँ से चिपचिपा गोंद बहने लगा जिसकी वजह से साँप पेड़ पर चढ़ नहीं पाया और थककर वापस लौट गया। चिंकी के बच्चे भी चिंकी की मदद कर रहे थे। गिलहरी ने अपने बच्चों को घोंसले में पहुँचा दिया था। इस तरह साँप से वे बच गए और बच्चों को पड़ोसी धर्म समझ में आ गया।

इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि मिल-जुलकर रहना चाहिए और मुसीबत में एक और एक ग्यारह बनकर मुकाबला करना चाहिए। एकता में बहुत बड़ी शक्ति होती है।

प्र.2. (अ) (1) शाखाएँ भी हमारी।

(2) साँप का पेड़ पर चढ़ना मुश्किल होने लगा।

(आ) (1) (2) (3)

(इ) (1) जूठा (2) बसेरा (3) राहत

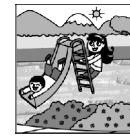
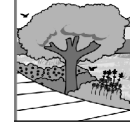
(ई) (1)-(ख) (2)-(ड) (3)-(क) (4)-(ग) (5)-(घ)

प्रकल्प

• विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

व्याकरण

★(1) चित्र (i) मैं एक बादल हूँ जो पेड़ पौधों को पानी देता हूँ। धरती पर हरियाली लाता हूँ।



चित्र (ii) मैं एक पेड़ हूँ जो पंछियों का आश्रयस्थान हूँ। मैं आप सबको मीठे फल देता हूँ।

चित्र (iii) मैं एक बाग हूँ। बच्चे मेरे यहाँ आकर खेलते हैं और खूब मजा लेते हैं।

(2) काबुलीवाले ने पूछा, “बिटिया अब कौन-सी चूड़ियाँ चाहिए?” मैंने अपनी गुड़िया दिखाकर कहा, “मेरी गुड़िया के लिए अच्छी सी चूड़ियाँ दे दो। जैसे : लाल, नीली, पीली।”

(3) (अ) (i) अर्थ : एकता में शक्ति होना।

वाक्य : आजादी की लड़ाई में भारतवासी एक और एक ग्यारह हो गए थे।

(ii) अर्थ : कठिन काम अकेले आदमी के बस में नहीं होता।

वाक्य : शत्रु से टक्कर लेने के लिए हमें पहले एक होना होगा क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

(आ) (i) वृक्ष, तरु (ii) नयन, नेत्र

(iii) ख्याल, सोच (iv) पवन, बयार

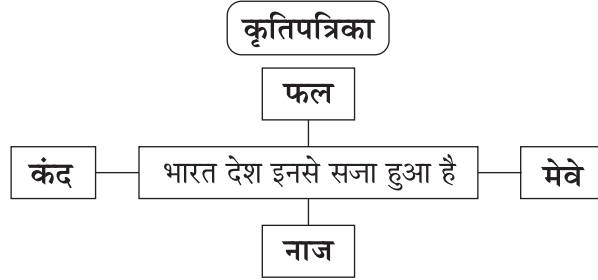
(इ) (i) आसान (ii) असुरक्षित (iii) अनुचित (iv) ऊपर

(4)

जलचर	थलचर	नभचर	उभयचर
मछली	गाय	तोता	मगरमच्छ
आक्टोपस	चूहा	उल्लू	साँप
	ऊँट	चिड़िया	मेंढक
	शेर		
	गिलहरी		

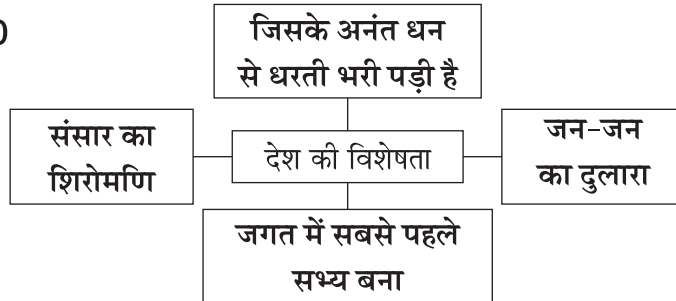
९. वह देश कौन-सा है ?

प्र.1. (1)



- (2) (i) (1) हिमालय पर्वत।
 (2) सुगंधित, दिन-रात खिलना।
 (ii) (1) सुधा की धारा कौन बहा रही हैं?
 (2) देश के चरण कौन धो रहा है?
- (3) भारत देश मनमोहिनी प्रकृति की गोद में बसा हुआ स्वर्ग-सा सुंदर है। दक्षिण में समुंद्र इसके निरंतर पैर धो रहा है और उत्तर में हिमालय मुकुट के समान शोभायमान है। इस देश में बहनेवाली नदियाँ अपने अमृत जल से इसकी धरती को सींचकर हराभरा बनाती हैं। इसीलिए देश कई प्रकार के फल, कंद, नाज, मेवे आदि से संपन्न है। यहाँ विविध प्रकार के फूल खिलकर दिन-रात अपनी सुगंध बिखेर रहे हैं।

प्र.2. (1)



- (2) (i) (1) मैदान, गिरि /, वन, पर्वत
 (2) नवक्रांति के पुजारी, देश के सेवक
 (ii) (1) संसार (2) दुलारा

- (3) मैदान हो या पर्वतीय प्रदेश, या वन में चारों ओर हरियाली लहलहा रही है। इसकी धरती अनंत खनिज संपत्ति से भरी पड़ी है। यह देश संसार का सर्वश्रेष्ठ देश है क्योंकि इसने ही दुनिया को सभ्यता का पाठ पढ़ाया। यह 'जन-जन का दुलारा देश है।' यहाँ कई सुपुत्रों ने जन्म लिया है जिन्होंने देश सेवा की है और देश में नवक्रांति लाई है।

प्र.3.

- (1) रामनरेश त्रिपाठी।
 (2) जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।
 जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन-सा है।
 (3) अपने देश की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन इन पंक्तियों में आया है। भारत देश के पैर समुंद्र सदैव धो रहा है और हिमालय हमारे देश का मुकुट है जो इसकी शोभा बढ़ा रहा है यह कल्पना ही कितनी सुंदर है। सहज भाषा में अपने देश की महिमा का वर्णन इन पंक्तियों में आया है।
 (4) कविता में कवि ने भारत की महिमा का वर्णन किया है। अपना देश प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न है। प्राचीन काल से यह सभ्य देश माना गया है। यह परंपरा हमें आगे बनाए रखनी है। विविधताओं से और विशेषताओं से संपन्न हमारे देश के प्रति प्रेम की भावना यह कविता विकसित करती है। देश की सेवा करना, उसका नाम उज्ज्वल करना हम सब की जिम्मेदारी है। यह संदेश इस कविता से मिलता है।

स्वाध्याय

- प्र.1. (अ) (1) सुधा (2) धरती (3) दुलारा
 (आ) (i) -(ख) (ii) -(घ) (iii) -(क) (iv) -(ग)
 (इ) (1) (2) (3)
 (ई) (1) रत्नेश (2) सभ्य (3) दुलारा

व्याकरण

- (1) सकर्मक क्रिया : धोनी क्रिकेट खेलता है।
 अकर्मक क्रिया : बालक दिनभर खेलता था।
 संयुक्त क्रिया : बालक दिनभर खेलता रहा।

सहायक क्रिया : खेलना क्रिया सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकती।

प्रेरणार्थक क्रिया :

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया : खिलाना।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया : खिलवाना।

वाक्य : बहन अपने छोटे भाई को खिला रही थी।

(प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया)

वाक्य : माँ ने कहा, अपने छोटे भाई को भी साथ में खिलवाओ।

(द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया)

(2) कल - (भूतकाल) राम ने लड्डू खाए।

आज - (वर्तमानकाल) राम लड्डू खा रहा है।

कल - (भविष्यकाल) राम लड्डू खाएगा।

(3) (अ) (i) पर्वत (ii) सरिता

(आ) (i) दुःखमय (ii) असभ्य (iii) नर्क (iv) दुर्गंध

(इ) (i) नदियाँ (ii) मेवे (iii) पुजारी (iv) हरियाली

(4)



(5)



रुक जाओ



वापस मूडना मना



दोनों रास्ते निषिद्ध



वन वे / एकल रास्ता



रुकना मना



पाठशाला



भारी वाहन निषेध



हॉर्न निषिद्ध /

या ट्रक पर प्रतिबंध

या शांति क्षेत्र

उपक्रम

● विद्यार्थी स्वयं कृती करें।

स्वयं-अध्ययन

जान बची तो लाखों पाए।

एक चित्रकार था। उसे प्राकृतिक दृश्यों को कागज पर उतारना बहुत अच्छा लगता था। दूर-दूर जंगलों में, पहाड़ियों में, नदी किनारे जाकर वह चित्र बनाता। उसके हाथ में ऐसी कला थी कि उसकी पेंटिंग उसे मालामाल कर देती थी।

एक बार वह नदी किनारे एक जंगल में चित्र बना रहा था। चित्र अभी बन ही रहा था कि वहाँ शायद पानी पीने एक शेर आ गया। पानी पीकर वह चित्रकार को देख रहा था तब चित्रकार ने उसे पूछा, “मैं तुम्हारी तस्वीर उतारूँ?” पता नहीं शेर को भी क्या सूझी? वह बड़े शौक से अपनी तस्वीर बनवाने चित्रकार के सामने बैठ गया।

चित्रकार दुनिया से बेखबर चित्र बनाने में मग्न था। अचानक शेर गुराया और वहाँ से भागकर पहाड़ों पर चढ़ गया। चित्रकार समझ ही न पाया कि शेर ने ऐसा क्यों किया। अभी वह उसी उधेड़बुन में था कि अचानक नदी में बाढ़ आ गई।

उसे अपनी तस्वीरें समेटने को भी समय न मिला, चारों ओर पानी-ही-पानी हो गया।

उस पानी में उसे एक नाव दिखाई दी तब उसकी जान में जान आई। वह उस नाव में सवार हो गया। शेर को शायद बाढ़ आने का संकेत पहले से मिल गया था इसीलिए भागकर जान बचाने पहाड़ पर चढ़ बैठा था। चित्रकार को बाढ़ आने के बाद भाग-दौड़ करनी पड़ी तब कहीं वह अपनी जान बचा पाया।

सीख : तात्पर्य यही कि मनुष्य हो या पशु सबको अपनी जान प्रिय होती है।

पुनरावर्तन - 2

प्र.1.	शाक (पत्तोंवाली)	सब्जियाँ
(1)	पालक	सेम की फली
(2)	सरसों का साग	सहजन की फली
(3)	चौलाई	लौकी
(4)	बथुआ	कद्दू
(5)	मेथी	बैंगन

प्र.2. जुलाई, 2020

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

दिनविशेष : 1 जुलाई - आषाढी एकादशी

5 जुलाई - गुरुपौर्णिमा

10 जुलाई - दीदी का जन्मदिन

25 जुलाई - नागपंचमी

प्र.3. विद्यार्थी स्वयं करें।

प्र.4. मेरा नाम आरव देशपांडे है। मैं 12 वर्ष का हूँ और छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे विद्यालय का नाम समता विद्यालय है जो पुणे के पास कोरेगाँव में है। मेरे पिताजी श्री. आनंद देशपांडे पेशे से डॉक्टर हैं और कोरेगाँव के सरकारी अस्पताल में काम करते हैं। उनके पास मरीज रोते-कराहते आता है और हँसता हुआ जाता है। मेरी माताजी श्रीमती विद्या देशपांडे शिक्षिका हैं और ज्युनियर कॉलेज में विज्ञान पढ़ाती हैं। मेरी एक प्यारी सी दीदी हैं जो इस वर्ष दसवीं की परीक्षा देगी। उसका नाम आर्या देशपांडे है और पाठशाला में हमेशा अक्वल आती हैं। हम सबको उम्मीद है कि बोर्ड की परीक्षा में भी वह इसी तरह अच्छे अंक लेकर अक्वल आएगी। आगे वह भी पिताजी की तरह डॉक्टर बनना चाहती हैं। पर मैं डॉक्टर नहीं बनूँगा। मुझे पायलट बनना है। मेरे दादा-दादी और नाना-नानी गाँव में रहते हैं जो गोवा के पास हैं। छुट्टियों में मैं वहाँ जाता हूँ और खूब मजे करता हूँ।

प्र.5. डॉ. होमी भाभा रजनी भिसे मंजू बंसल
भास्कराचार्य डॉ. ए. पी. जे. कलाम जानकी अम्मल
कल्पना चावला

कृति

(1) अपने बारे में भाई/बहन से सुनो।

मैं जब-जब पायलट बनने की बात करता हूँ, दीदी मुझे चिढ़ाती हैं। मेरे बचपन का एक प्रसंग याद दिलाती हैं। आज सुनकर हँसी आ जाती है पर उस समय मैं बहुत डर गया था। जीवन में पहली बार मैं हवाई यात्रा कर रहा था। उम्र होगी लगभग चार वर्ष। उस यात्रा का आकर्षण इतना था कि अपने सभी दोस्तों को बता आया था कि मैं आकाश में उड़नेवाला हूँ। पूना से हैद्राबाद सिर्फ डेढ़ घंटे में पहुँचूँगा। पर मेरे मित्र बंटी ने बताया कि, कभी-कभी विमान दुर्घटना होती है तो सारे यात्री मर जाते हैं। सुना तो मेरी अंतर्आत्मा काँप उठी। ऐसा डर बैठ गया कि मैंने पापा को बार-बार पूछकर तंग किया था विमान बीच में खराब हो गया तो! यात्रा के दौरान हवाई सुंदरी ने सारी जानकारी दी जो बहुत अच्छे से समझ में भी आई पर डर गया नहीं। विमान ने जब टेक ऑफ किया तो उसके हिलने से मैं जोर से

चीखा था। हैदराबाद उतरने तक मैं डरा- डरा सा था। अब हँसी आती है पर दीदी मुझे चिढ़ाने का मौका नहीं छोड़ती।

(2) इस वर्ष तुम कौन-सा विशेष कार्य करोगे, बताओ।

जैसे ही मई की छुट्टियाँ शुरू होती हैं मैं उसे मौज-मस्ती के साथ बिताने की योजना बनाने लगता हूँ। पर इस वर्ष माँ ने बताया कि हम कहीं घूमने नहीं जाएँगे। क्योंकि दीदी की दसवीं की पढ़ाई शुरू हो गई है। तो मैंने सोचा मैं भी कुछ पढ़ ही लूँगा। फिर मैंने माँ से पूछकर अपनी योजना को हकीकत में बदलने का निश्चय किया। मैं इस वर्ष संगणक का एनिमेशन का कोर्स करूँगा। मुझे संगणक में रुचि है। कुछ काम की बात भी सीख लूँ तो अच्छा रहेगा, इसलिए माँ ने भी मुझे इजाजत दे दी है। इसके अलावा आसपास के घरों में और होटलों में पानी बचाने का अनुरोध करने अपने मित्रों के साथ जाऊँगा। जैसे ही मेरी परीक्षा खत्म होगी मैं अपना काम शुरू कर दूँगा।

(3) सप्ताह में एक दिन कहानियाँ पढ़ो।

अनोखा संदेश

एक जमींदार ने बहुत सारी जमीन पर धान की फसल उगाई और उसकी रखवाली के लिए अनेक नौकर तैनात कर दिए। वे रात-दिन रखवाली करते, लेकिन फिर भी पक्षी आकर फसल खा जाते।

नौकरों ने यह बात किसान को बताई, तो उसने रखवालों को जाल फैलाने का आदेश दिया, ताकि पक्षियों को पकड़ा जा सके। एक दिन उसमें एक सुंदर पक्षी फँस गया। नौकर उसे जमींदार के पास ले गए। उन्होंने कहा – यह रोज हमारे खेत से भरपेट धान खाता है और खाने के बाद कुछ धान की बालियों को मुँह में दबाकर उड़ जाता है। जमींदार ने सुना तो बोला- अच्छा अब हम इसे सजा देंगे।

तभी पक्षी बोल पड़ा सजा देने से पहले आप मेरी भी सुन लें। जमींदार ने कहा – ठीक है कहो, पक्षी ने कहा आपके इतने बड़े खेत से मेरी चोंच भर हिस्सा लेने से आपका कुछ विशेष नुकसान नहीं हो जाएगा। मैं अपने खाने के बाद केवल छह बालियाँ लेकर जाता हूँ। जमींदार ने पूछा,

“किसलिए?” पक्षी ने कहा, “मैं दो बालियाँ अपने वृद्ध माता-पिता के लिए लेकर जाता हूँ। उन्हें अब दिखाई नहीं देता है। मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने वृद्ध माता-पिता का पालन पोषण करूँ, उन्हें भूखा न रखूँ।

दो बालियाँ नन्हे-मुन्ने बच्चों के लिए लेकर जाता हूँ और दो बालियाँ परमार्थ रूप में अपने बीमार पड़ोसियों के लिए लेकर जाता हूँ। यदि जीवन में इतना परमार्थ भी न कर सकूँ तो मेरा जीवन व्यर्थ है।” पक्षी का कथन सुनकर जमींदार बहुत प्रभावित हुआ। उसे लगा इससे सीखने की जरूरत है। उसने पक्षी को आजाद किया।

(4) पढ़ी हुई सामग्री की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति करो।

इस वर्ष हमें नई पाठ्यपुस्तक मिली जिसका नाम सुलभ भारती है। पाठ्यक्रम दो भागों में बँटा हुआ है – पहली इकाई और दूसरी इकाई।

दोनों इकाइयों की शुरुआत चित्रात्मक पाठों से की गई है। फिर दोनों इकाइयों में मिलकर चार कविताएँ हैं, कहानियाँ हैं, एकांकी है, पत्र है, संस्मरण है, व्याकरण है। पाठ्यसामग्री के नीचे दिए गए स्वाध्याय में कल्पनाशीलता को प्रधानता दी गई है। जरा सोचो, खोजबीन, मैंने क्या समझा, अध्ययन कौशल, भाषा की ओर आदि करने में अध्ययन बोझ या उक्तानेवाला नहीं लगता। बीच बीच में पहेलियाँ दी हैं या चुटकुले सुनाने को कहा है जिसके कारण हँसते-खेलते पढ़ाई हो जाती है। साथ ही जीवन के नैतिक मूल्यों को भी खूब याद दिलाया गया है। जैसे ईमानदारी, कर्मठता आदि बातें पाठ्यसामग्री द्वारा पढ़ाई गई हैं।